Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. IV, Issue VIII, October-2012, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

भीमराव अम्बेडकर का व्यक्तित्व एवं संस्थाओं का डॉ. अम्बेडकर पर प्रभाव

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. IV, Issue VIII, October-2012, ISSN 2230-7540

भीमराव अम्बेडकर का व्यक्तित्व एवं संस्थाओं का डॉ. अम्बेडकर पर प्रभाव

Arun Prakash

Research Scholar, CMJ University, Shillong, Meghalaya, India

---------------------------♦-----------------------------

डॉ. भीमराव अम्बेडकर का जन्म 14 अप्रेल सन्, 1891 को मध्य भारत में इन्दौर के पास महू नामक स्थान पर हुआ। अपने 14 भाई–बहनों में वे सबसे छोटे और सबसे होनहार थे। उनके पिता का नाम रामजी वन्द मालोजी साकपाल तथा माता का नाम भीमाबाई था। अम्बेडकर का पूरा नाम भीमराव रामजी अम्बेडकर था। अम्बेडकर का परिवार कबीर पंथी थी। जब अम्बेडकर की आयु दो वर्ष की थी, उनके पिता रामजी सकपाल सैनिक सेवा में निवृत्त हो गए। वे महाराष्ट्र के कोंकण प्रदेश में स्थि दापोली नामक नगर में अन्य सेवानिवृत्त सैनिकों के साथ बस गए। जब अम्बेडकर की आयु पांच वर्ष की थी, उन्हें दपोली की एक प्राइमरी पाठशाला में भर्ती कराया गया। इसी बीच उनके पिता ने सतारा में एक नौकरी प्राप्त कर ली और अम्बेडकर का सारा परिवार बम्बई आकर रहने लगा। अम्बेडकर की आयु छह वर्ष की ही थी कि उनकी माता भीमाबाई का देहांत हो गया। माता के अभाव में अबेडकर का लालन–पालन मुख्यतः उनकी बुआ मीराबाई ने किया।[1]

अम्बेडकर के चरित्र–निर्माण में उनके पिता का गहरा हाथ रहा है। नियमितता, संयम, समाज सेवा, परिश्रम, धर्मशीलता–ये गुण अम्बेडकर ने अपने पिता से सीखे थे। पिता अपने बच्चों से ािजन, अनंग और दोहों का पाठ करवाते थे। भीमराव को नई–नई पुस्तकें पढ़ने का शौक था। इससे उनक पिता को बड़ी प्रसन्नता होती थी वे अम्बेडकर को पुस्तकें खरीदने के लिए पैसे जरूर देते थे। सतारा में अम्बेडकर ने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा पूरी की और हाईस्कूल की शिक्षा आरम्भ की।[2] कुछ समय पश्चात् अम्बेडकर का परिवार बम्बई आ गया। अम्बेडकर पढ़ने–लिखने में तेज था। अछूत परिवार में जन्म लेने के कारण उनहें जिन प्रहारों को झेलना पड़ा था, उन्होंने अपनी श्झिक्षा द्वारा उस कमी को पूरा करने का प्रयास किया। सन् 1907 में उन्होंने एलफिंस्टन हाईस्कूल, बम्बई से मैट्रिकुलेशन की परीक्षा उत्तीर्ण की। एक अछूत विद्यार्थी के लिए यह एक असामान्य उपलब्धि थीं अतः महार समाज ने इसे हर्षोल्लास के साथ मनाने का निश्चय किया। अम्बेडकर का अभिनन्दन करने के लिए प्रसिद्ध समाज सुधारक एस.के.बोले की अध्यक्षता में एक विशिष्ट सभा का आयोजन किया गया।[3] बम्बई में आयोजित इस सभा मे ंएक अन्य प्रसिद्ध समाज सुधारक तथा मराठी लेखक कृष्णजी केलुस्कर भी उपसिथत थे। केलुस्कर विल्सन हाई स्कूल में सहायक अध्यापक थे और उनकी अम्बेडकर से भेंट चर्नी रोड बगीचे में हुई थी। अम्बेडकर को नियमित रूप से पढ़ते देख, उन्होंने उससे परिचय प्राप्त किया और वह एक अछूत लड़का है यह जानकर आश्चर्यचकित रह गए। केलुस्कर ने अम्बेडकर को अच्छी–अच्छी पुस्तकें पढ़ने के लिए उपलब्ध कराना प्रारंभ किया और अपनी नई पुस्तक ''लाइफ ऑफ गौतम बुद्ध'' की एक प्रति अम्बेडकर को भेंट की।[4] इस सम्मान समारोह के लिए आयोजित सभा में केलुस्कर ने अम्बेडकर की उपलब्धियों की प्रशंसा कीं केलुस्कर ने रामजी सकपाल से भी पूछा कि अगले अध्यनन के लिए वे अपने पुत्र को विश्वविद्यालय में भेजेंगे या नहीं। पिता ने उत्तर दियाकि वे अपनी आर्थिक स्थिति खराब होने पर भी अम्बेडकर को पढ़ायेंगे। केलुस्कर ने भी अम्बेडकर तथा उनके पिता को यह आश्वासन दिया कि वे अम्बेडकर की आर्थिक सहायता करेंगें।[5] अम्बेडकर ने अपनी पढ़ाइ के लिए बहुत कड़ा परिश्रम किया। उनका परिवार श्रमिक बस्ती में रहता था। अतः मजदूरों की दयनीय स्थिति से परिचय हो चुका था। कई बार वे अपने सम्बन्धियों के टिफिन लेकर मिलों में देने जाते थे। वहाँ उन्हें श्रमिकों की कार्य करने की दशाओं का भी ज्ञान हुआ।[6] मैट्रिकुलेशन परीक्षा पास करने के कुछ ही दिनों बाद अम्बेडकर का विवाह हो गया। इस समय उनकी आयु मात्र सत्रह वर्ष थी। विवाह के समय उनकी पत्नी रामी मात्र नौ वर्ष की थी। विवाह के बाद सभी का नामकरण रमाबाई किया गया। अल्पआयु में ही अम्बेडकर का विवाह हो जाने के कारण उनके ज्ञान प्राप्त करने और अध्ययन करने की इच्छा में कोई कमी नहीं आई। अम्बेडकर ने जनवरी 1908 मे बम्बई के सुप्रसिद्ध एलफिंस्टन कॉलेज में प्रवेश लिया। बडौदा नरेश सयाजी राव गावकवाड़ ने अम्बेडकर के एक उदार अध्यापक कृष्णजी अर्जुन केलुस्कर की सिफारिश पर उन्हें उच्च शिक्षा के लिए 20 रू. माह की छात्रवृत्ति दी। जैसा की कहा जा चुका है कि केलुस्कर ने मराठी में भगवान बुद्ध की एक लोकोपयोगी जीवनी लिखी थी। केलुस्कर ने यह जीवनी अम्बेडकर को पढ़ने के लिए दी। अम्बेडकर के मन में भगवान बुद्ध और उनके धर्म के प्रति यहीं से रूचि जागृत हुई। केलुस्कर अम्बेडकर के प्रारम्भिक जीवन में शक्ति के स्रोत्र हुए।[7] अम्बेडकर ने एलफिंस्टन कॉलेज में बिना किसी व्सवधान के अध्ययन को जारी रखा। कॉलेज में अग्रेंजी के प्रोफेसर मुलर ने अम्बेडकर को किताबें और कपड़े दिए। एक अन्य प्रोफेसर इरानी ने उन्हें अध्ययन हेतु अपना कमरा दे दिया था। अम्बेडकर की कर्त्तव्यनिष्ठा, अनुशासन और कुशाग्र बुद्धि से

---

[1] भारती के.एस. फाउन्डेशन ऑफ अम्बेडकर थॉट, दत्त संस प्रकाशन, नई दिल्ली, सन् 1990, पृष्ठ 4, गुप्त विश्व प्रकाश, गुप्ता मोहिनी, भीमराव अम्बेडकर व्यक्ति और विचार, राजा पब्लिकेशन, नई दिल्ली सन् 1997, पृष्ठ 36

[2] निम, डी.आर. अम्बेडकर जीवन दर्शन, विद्या विहार, नई दिल्ली, सन् 1991, पृष्ठ 14

[3] भारती, के.एस., डॉ. भीमराव अम्बेडकर थॉट, पूर्वोक्त, पृष्ठ 6

[4] सहारे, एम.एल. डॉ.भीमराव अम्बेडकर; हिज लाइफ एंड मिशन, नेशनल कौंसिल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड हेनिग, नई दिल्ली, सन् 1987, पृष्ठ 7

[5] उपरोक्त, पृष्ठ 9

[6] उपरोक्त, पृष्ठ 10

[7] गुप्त विश्व प्रकाश, गुप्ता मोहिनी, भीमराव अम्बेडकर व्यक्ति और विचार, पूर्वोक्त, पृष्ठ 38

www.ignited.in

ये प्रोफेसर अत्यन्त प्रभावित एंव प्रसन्न थे। सन् 1912 के नवम्बर माह में अम्बेडकर ने बी.ए. की परिक्षा पास की।[8] बी.ए. पास करने के बाद अम्बेडकर ने अपने पिता की इच्छा के विरूद्ध बडौदा रियासत में नौकरी करने का निश्चय किया। अम्बेडकर ने बडौदा राज्य की सेना में लैफ्टीनेन्ट के पद से अपनी जीवन–चर्चा प्रारम्भ की। वहाँ काम करते हुए उन्हें 15 दिन ही बीते होगें कि 2 फरवरी, सन् 1913 को उनके पिता का स्वर्गवास हो गया। पिता ने अपने सारे अभावों और गरीबी के बावजूद अम्बेडकर की पढ़ाई में कोई कमीं नहीं आने दी थी। पिता का देहान्त अम्बेडकर के लिए बहुत बड़ा धक्का था।[9]

अमेरिका में उच्च अध्ययन हेतु प्रयास

बडौदा रियासत की सेना में नौकरी करना उन्हें पसन्द नहीं था। वे आगे पढ़ना चाहते थे। तभी बडौदा नरेश ने कुछ विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के लिए छात्रवृत्ति देकर अमेरिका भेजने का निश्चय किया और अम्बेडकर को छात्रवृत्ति के लिए चुन लिया। 4 जून, सन् 1913 को अम्बेडकर ने बडौदा जाकर रियासत के संविदा–पत्र पर हस्ताक्षर किए। इस संविदा की शर्त थी कि उच्च शिक्षा पूरी करने के बाद अम्बेडकर 10 साल तक बड़ौदा रियासत की नौकरी करेंगे।[10] जुलाई सन् 1913 के तीसरे सप्ताह में अम्बेडकर न्यूयार्क पहुचें। वहाँ उन्होंने कोलम्बिमा विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया। कोलम्बिया विश्वविद्यालय का जीवन अम्बेडकर के लिए दिव्य प्रकाश देने वाला था। अम्बेडकर का अमेरिका प्रवास उनके जीवन का निर्णायक मोड़ था। यहाँ उन्होंने समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व के व्यवहारिक पाठ पढ़े। अमेरिका में अम्बेडकर ने आत्म–सम्मान, स्वावलम्बन और आत्मोद्धार के गुण आत्मसात किए। कोलम्बिया विश्वविद्यालय में उन्हें अपने प्रोफेसर एडविन आर.ए. सेलिग्मान से विशेष प्रेरणा मिली। सुप्रसिद्ध शिक्षाविद् जान ड्युई भी उन दिनों कोलम्बिया विश्वविद्यालय में थे। अम्बेडकर ने अपने विचारों पर ड्युई का ऋण भी स्वीकार किया है। अम्बेडकर ने सन् 1915 मे एम.ए. परीक्षा पास की।[11] उनके अध्ययन का प्रमुख प्रतिपाद्य विषय अर्थशास्त्र था। अर्थशास्त्र के साथ–साथ उन्होंने समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, नैतिकशास्त्र तथा मानवशास्त्र का भी अध्ययन किया। अम्बेडकर ने 9 मई सन् 1916 को डॉ. गोल्डन बीजर के आथ्रोंपालोजी सेमीनार में एक शोध पत्र प्रस्तुत किया जिसका शीर्षक था ''कास्हम इन इण्डियाः देअर मेकेनिज्म जेनेसिस एण्ड डेवलपमेन्ट'' अम्बेडकर ने अपनी पी–एच.डी. उपाधि हेतु जून सन् 1916 में कोलम्बिया विश्वविद्यालय में एक शोध प्रबन्ध प्रस्तुत किया। इसका शीर्षक था– 'नेशनल डिविडेनड ऑफ इण्डिया–ए हिस्टोरिया एण्ड एनालिटिकल स्टडी' विश्वविद्यालय ने उसे स्वीकृत कर लिया।[12] परन्तु विधिवत् उपाधि देने के लिए यह आवश्यक था कि उस शोध प्रबन्ध की निश्चित प्रतियाँ विश्वविद्यालय में प्रस्तुत की जाती। परन्तु अम्बेडकर के पास इतना धन नहीं था।[13] इस शोध प्रबन्ध को मैसर्स पी.एस.किंग एण्ड सन लि.लदन ने एक नए शीर्षक ''दी इवाल्यूशन ऑफ प्राविन्शियल फाइनेन्स इन ब्रिटिश इण्डिया, स्टडी इन दि प्राविन्शियल डिसेन्ट्रलाइजेशन ऑफ इम्पीरियल फाइनेन्स'' के साथ प्रकाशित किया तब अम्बेडकर ने इसकी प्रतियाँ विश्वविद्यालय को प्रस्तुत की और उन्हें पीएच.डी. की उपाधि प्रदान की गई।[14] अम्बेडकर ने यह शोधकृति बडौदा–नरेश को समर्पित की थी। पुस्तक में सन् 1833 के भारतीय शासन अधिनियम के बाद से भारत की वित्त–व्यवस्था के विकास का विश्लेषण किया था। इस व्यवस्था में ब्रिटिश अधिकारियों का दृष्टिकोण सदा यह रहता था कि अंग्रेज सरकार को अधिक से अधिक लाभ पहुँचाया जाए। इस पुस्तक के आधार पर ही भारतीय मुद्रा विषयक राजकीय आयोग ने सन् 1925 में अम्बेडकर से भारतीय वित्त–व्यवस्था के सम्बन्ध में गवाही मांगी थी। पुस्तक केन्द्रिय विधानसभा के सदस्यों के लिए वार्षिक बजट पर चर्चा करते समय संदर्भ–ग्रंथ का काम देती थी। अमेरिका छोड़ने के कुछ समय बाद अम्बेडकर लन्दन पहुँचे और बार.एट–लॉ की पढ़ाई के लिए अक्टूबर सन् 1916 में ''ग्रेस इन'' में और अर्थशास्त्र के अध्ययन के लिए ''लन्दन स्कूल ऑफ इकानॉमिक्स एण्ड पॉलिटिकल साइन्स'' में प्रवेश लिया। इंग्लैंड में अम्बेडकर के आगमन के समय उनकी ब्रिटिश खुफिया पुलिस अधिकारी ने सम्पूर्ण तलाशी ली थी। उनका विचार था कि अम्बेडकर ''इण्डिया रिवाल्यूशनरी पार्टी'' के सदस्य हैं।[15] जब वे अमेरिका में थे तो उन्हें भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में सम्मिलित होने हेतु कहा गया था। परन्तु अम्बेडकर ने विनम्रतापूर्वक स्पष्ट कह दिया था कि वे न्यूयार्क में केवल विद्याध्ययन ही करेंगे। वे महाराजा बड़ौदा द्वारा अपने जीवन में उपलब्ध कराई गई दुर्लभ सुविधा का लाभ उठाएँगे और महाराजा के साथ विश्वाघात नहीं करेंगे। महाराजा बड़ौदा ने प्रोफेसर सेलिगमेन की सिफारिश पर छात्रवृत्ति की अवधि एक वर्ष के लिए और बढ़ा दी थी परन्तु यह खबर अम्बेडकर को अमेरिका में मिलती, उसके पहले ही उन्होंने अमेरिका छोड़ दिया था।[16] अम्बेडकर ने लंदन में पढने हेतु महाराजा बड़ौदा की स्वीकृति प्राप्त कर ली। लंदन में प्रोफेसरों ने अम्बेडकर के उन्नत अध्ययन को देखते हुए उन्हें अर्थशास्त्र में डी.एस.पी. की उपाधि के लिए तैयार करने की अनुमति दे दी। वह पहले से ही एम.ए.पी.–एच.डी. थे अतः उन्हें एम.एस.सी. (अर्थशास्त्र) करने की स्वीकृति भी मिल गई।[17] लंदन में भी अम्बेडकर ने अपने आपको अमेरिका की भाँति, अध्ययन में व्यस्त रखा। इस बीज उनकी छात्रवृत्ति की अवधि समाप्त हो गई। बड़ौदा रियासत के दिवान ने उन्हें वापिस भारत आने को कहा। उन्होंने महाराजा बड़ौदा को पुनः आवेदन किया कि उनकी छात्रवृत्ति की अवधि और बड़ा दी जाए परन्तु ऐसा सम्भव नहीं हुआ। अम्बेडकर को अपना उध्ययन वापस छोड़कर बीच में ही लौटना पड़ा।[18]

भारत में वापसी

अम्बेडकर 21 अगस्त, सन् 1917 को बम्बई पहुँचे। वहाँ उनके प्रशंसकों ने उनका स्वागत किया। अम्बेडकर को बड़ौदा सरकार के साथ किए गए करार के अनुसार दस साल तक बड़ौदा की सरकार की सेवा करनी थी। अम्बेडकर बड़ौदा गए भी लेकिन नीची जाति होने के कारण उनके साथ अच्छा व्यवहार नहीं हुआ। रिसायत को कोई अधिकारी उनकी अगचनी के लिए स्टेशन नहीं आया। अम्बेडकर को अपनी जाति के कारण किसी होटल में ठहरने के लिए जगह नहीं मिली। बड़ौदा–नरेश चाहते थे कि अम्बेडकर को अपनी रियासत का

---

8 उपरोक्त, पृष्ठ 39

9 भारतीय के.एस., फॉउन्डेशन ऑफ अम्बेडकर थॉट, पूर्वोक्त, पृष्ठ 7

10 कीर धनंजय, डॉ. बाबा साहब अम्बेडकर, पॉपूलर प्रकाशन प्रथम हिन्दी संस्करण, नई दिल्ली, प्रथम हिन्दी संस्करण–1996, पृष्ठ 24

11 कुको, डब्ल्यू. एन. डॉ. अम्बेडकर; अ. क्रिटिकल स्टडी पीपुल पब्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली सन् 1979, पृष्ठ 24

12 उपरोक्त, पृष्ठ 27

13 उपरोक्त, पृष्ठ 30

14 उपरोक्त, पृष्ठ 32

15 देसाई, ए.आर. सोशल बैकग्राउन्ड ऑफ इण्डियन नेशनलिज्म, पापुलर प्रकाशन, बम्बई, सन् 1982, पृष्ठ 18

16 उपरोक्त, पृष्ठ 19

17 उपरोक्त, पृष्ठ 21

18 उपरोक्त, पृष्ठ 28

वित्तमंत्री बनाएँ। लेकिन उन्होंने शुरू में अम्बेडकर को अपना सैनिक सचिव बनाया।[19] अम्बेडकर इतने ऊँचे पद पर आसीन थे लेकिन उनके सहयोगियों और क्लकों तथा चपरासियों तक ने जाति के कारण उनके साथ बुरा बर्ताव किया। अम्बेडकर कई मित्रों से भी मिले पर उनके निवास एंव भोजन की कोई सुचारू व्यवस्था नहीं हो सकी। थके, भूखे तथा परेशान अम्बेडकर ने अपना सामान उठाया और एक पेड़ के नीचे जाकर बैठ गए और उनकी आँखों से आँसुओं की अविरल धारा बह निकली।[20] बड़ौदा के दमघोंटू वातावरण से खिन्न होकर नवम्बर, सन् 1917 में अम्बेडकर बम्बई वापस लौट आए। सन् 1917 का वर्ष भारतीय राजनीति के लिए घोर उथल–पुथल का समय था। इण्डिन नेशनल कांग्रेस ने अछूतों की समस्याओं में दिलचस्पी लेनी शुरू कर दी थी। दिसम्बर, सन् 1917 में कांग्रेस ने अपने कलकत्ता अधिवेशन में भारत की अछूत समस्या के बारे में एक प्रस्ताव भी पास किया था। दलित वर्ग मिशन समाज ने 23 और 24 मार्च, सन् 1916 को अपना पहला अखिल भारतीय सम्मेलन किया। इस सम्मेलन में विठ्ठल भाई पटेल, एम.आर.जयकर और विपिन चन्द्रपाल जैसे नेताओं ने भाग लिया था। इस सम्मेलन ने एक अखिल भारतीय अस्पृश्यता–विरोधी घोषणा–पत्र प्रकाशित किया जिस पर अनेक प्रमुख नेताओं ने हस्ताक्षर किये। अम्बेडकर सामाजिक सेवा के क्षेत्र में कूद पड़ने से पहले अपनी आर्थिक स्थिति पुष्ट कर लेना चाहते थे। अपनी माली हालत सुधारने के लिए अम्बेडकर ने प्राइवेट ट्यूशनें कीं और शेयर बाजार के दलालों को परामर्श देने के लिए एक कम्पनी खोली। परन्तु जब उनके ग्राहकों को यह मालूम हुआ कि उन्हें सलाह देने वाला एक अछूत है तो उन्होंने उनकी सलाह लेनी बन्द कर दी और अम्बेडकर को अपना वह ऑफिस बन्द करना पड़ा।[21] उन्होंने कुछ दिनों के लिए एक पारसी सज्जन का हिसाब–किताब रखने का भी काम किया। इन्हीं दिनों उन्होंने दार्शनिक बट्रैंड रसैल की पुस्तक ''रिकन्स्ट्रक्शन ऑफ सोसायटी'' की समीक्षा की जो इण्डियन ईकानामिक सोसासटी की मासिक पत्रिका में प्रकाशित हुई यही वह समय था जब भारतीय कृषि के सम्बम्ध में अम्बेडकर का एक आलेख स्माल होल्डिंग्ज इन एंड देयर रेमेडीज़ प्रकाशित हुआ। जिन दिनों अम्बेडकर अपने कैरियर के लिए संघर्षरत थे, बम्बई के सिडहम कॉलेज में राजनीतिक अर्थशास्त्र का पद रिक्त हुआ। इस पद के लिए अम्बेडकर ने प्रार्थना–पत्र दिया। इस जगह के लिए कुल ग्यारह उम्मीदवार थे। कॉलेज के अधिकारियों की भी उनके बारें में अनुकूल राय बनी। डॉ. अम्बेडकर की उनके सिडहम कॉलेज में राजनीतिक अर्थशास्त्र के अध्यापक पद पर चुन लिया गया।[22] अम्बेडकर नियमित नौकरी के द्वारा कुछ धन एकत्रित करके लन्दन जाना और वहाँ विधिशास्त्र तथा अर्थशास्त्र का अपना अध्ययन पूरा करना चाहते थे। अध्यापक के रूप में विद्यार्थियों की संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती गई। उनका गहन अध्यापन, विचारों का स्पष्टीकरण और विषय का विवेचन विद्यार्थियों के लिए चुम्बक के सदृश प्रमाणित हुआ। उनकी लोकप्रियता इतनी अधिक थी कि दूसरे कॉलेजों के विद्यार्थी भी उनका व्याख्यान सुनने के लिए कक्षा में आते थे।[23]

लंदन में अध्ययन

अम्बेडकर जुलाई, सन् 1920 में लंदन चले गए। उनका लक्ष्य विधिशास्त्र और अर्थशास्त्र की अपनी पढ़ाई पुरी करनी थी। उनके स्नेही मित्र नवल मथेना ने उन्हें 5,000 रू का ऋण दिया था। कुछ आर्थिक सहायता उन्हें कोल्हापुर नरेश से प्राप्त हुई थी। लंदन में अम्बेडकर ने सितम्बर, सन् 1920 से अपना अध्ययन नियमित रूप से आरम्भ किया। उन्होंने ब्रिटिश संग्रहालय, इंडिया ऑफिस, लंदन विश्वविद्यालय तथा शहर के अन्य प्रमुख ग्रंथागारों में उपलब्ध अपने विषय की पुस्तकों का दिन–रात अध्ययन किया।[24] उन्होंने लंदन में तत्कालीन भारतमंत्री मोहेग्यू तथा विठ्ठलभाई पटेल से भी भेंट की। उन दिनों विठ्ठलभाई पटेल लंदन में ही थे। अम्बेडकर ने इन दोनों नेताओं को भारतीय अछूतों की राजनीतिक परिदृश्य तेजी से बदल रहा था। अगस्त सन् 1920 को लोमान्य बाल गंगाधर तिलक की मृत्यु हो गई और भारतीय राजनीति में गाँधी–युग आरम्भ हो गया।[25] अब शिक्षा की दृष्टि से अम्बेडकर का छात्र–जीवन पूरा हो चुका था। वे अमेरिका से पी–एच.डी. तथा लंदन से डी.एस.सी. और बैरिस्टर की उपाधियाँ प्राप्त कर चुके थे। उन्होंने अर्थशास्त्र, विधिशास्त्र और समाजशास्त्र का गहरा अध्ययन किया था। अब समय था कि वे सक्रिय राजनीति में कूद पड़े और अपने जीवन का मिशन पुरा करें। इसी लक्ष्य को ध्यान में रखकर अप्रेल, सन् 1923 में वे स्वदेश वापस लौट आए।[26]

सार्वजनिक जीवन का आरम्भ

लंदन जाने से पूर्व डॉ. अम्बेडकर ने सिडहम कॉलेज में आचार्य–पद संभालने के बाद सार्वजनिक जीवन में भाग लेना आरम्भ किया। सक्रिय राजनीति में उनकी रूचि नहीं थी। उनकी मुख्य दिलचस्पी अपनी जाति के लोगों की स्थिति में सुधार करना था। इसीलिए उन्होंने अछूतों के उद्धार के काम जो संस्थाएँ और व्यक्ति लगे हुए थे, उनसे सम्पर्क साधा।[27] ब्रिटिश सरकार ने मेटिण्यू चेम्सफोर्ड सुधारों के सन्दर्भ में मताधिकार की समस्या पर विचार करने के लिए साउथ बोरो समिति नियुक्त की थी। इस समिति ने अम्बेडकर को गवाही के लिए पृथक निर्वाचन–क्षेत्रों और आरक्षित स्थानों की मांग की। श्रीमति एनीबीसेंट मांडले की जेल से छूटकर आए थे और भारत को अपनी मातृभूमि मानती थी। होमरूल आन्दोलन का लक्ष्य ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत भारत में स्वशासन की स्थापना करना था। अम्बेडकर ने होमरूल आन्दोलन का समर्थन नहीं किया। उनका कहना था कि भारत को होमरूल की मांग करने से पहले दलित वर्गों की स्थिति वर्गों में सुधार करना चाहिए।[28] सन् 1919 में अम्बेडकर का कोल्हापुर के प्रबुद्ध शासक शाहूजी से परिचय हुआ। वे अपनी रियासत में जात–पांत के बंधनों को तोड़ने के लिए कार्य कर रहे थे। उन्होंने अछूतों की कई प्रकार से सहायता की थी। उनकी सहायता से अम्बेडकर ने अछूतों की कई प्रकार से सहायता की थी। उनकी सहायता से अम्बेडकर ने अछूतों की कई प्रकार से सहायता की थी। उनकी सहायता से अम्बेडकर ने अछूतों का दृष्टिकोण सबके सामने रखने के

[19] कीर, धनंजय, डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर, पूर्वोक्त, पृष्ठ 33
[20] गुप्त विश्व प्रकाश, गुप्ता मोहिनी, भीमराव अम्बेडकर व्यक्ति और विचार, पूर्वोक्त, पृष्ठ 40
[21] निम, डी.आर. अबेडकर जीवन–दर्शन पूर्वोक्त, पृष्ठ 31
[22] गुप्त विश्व प्रकाश, मोहिनी गुप्ता, भीमराव अम्बेडकर व्यक्ति और विचार, पूर्वोक्त, पृष्ठ 40
[23] उपरोक्त, पृष्ठ 41
[24] हर्ष हरदान, डॉ. भीमराव अम्बेडकर जीवन और दर्शन, (पंचशील प्रकाशन, जयपुर (पंचशील प्रकाशन, जयपुर) सन् 1995, पृष्ठ 11, कीर, धनन्जय, डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर–जीवन चरित, (पॉपुलर प्रकाशन, नई दिल्ली) प्रथम हिन्दी संस्करण 1996, पृष्ठ 32
[25] भारती के.एस. फॉउन्डेशन ऑफ अम्बेडकर थॉट, पूर्वोक्त, पृष्ठ 8
[26] भटनागर डॉ. राजेन्द्र मोहन, डॉ. अम्बेडकर व्यक्तित्व और कृतित्व (चिन्मय प्रकाशन, जयपुर) सन् 1994, पृष्ठ 30
[27] कीर, धनन्जय, डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर–पूर्वोक्त, पृष्ठ 38
[28] उपरोक्त, पृष्ठ 39

लिए 31 जनवरी, सन् 1920 को ''मूक नायक'' नामक पाक्षिक पत्रिका का प्रथम अंक निकला। पत्रिका का सारा काम–काज अम्बेडकर करते थे।[29] वे ही उसके लिए लिखते थे परन्तु वे उसके अधिकृत संपादक नहीं थे क्योंकि वे प्रोफेसर के रूप में अपनी सेवाएँ दे रहे थे। इस पत्र में अम्बेडकर ने जाति प्रथा में निहित आधारभूत अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाई तथा उन्होंने साक्षरता और ज्ञान के प्रकाश की वकालत की। 21 मार्च, सन् 1920 में कोल्हापुर के मानगांव में अछूतों का एक सम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन की अध्यक्षता अम्बेडकर ने की। कोल्हापुर नरेश श्री शाहू जी महाराज भी इस सम्मेलन में उपस्थित हुए और उन्होंने अम्बेडकर के प्रयासों की सराहना की। श्री शाहू ने इस अवसर पर अम्बेडकर को दलितों का सच्चा नेता कहा। उन्होंने अम्बेडकर के उज्जवल भविष्य की आशा व्यक्त की।[30] 27 मई सन् 1920 के अन्तिम सप्ताह में नागपुर में अछूतों का एक और महत्वपूर्ण सम्मेलन हुआ। अम्बेडकर ने इस सम्मेलन में भी भाग लिया। इस सम्मेलन में अम्बडेकर के नेतृत्व के गुण खुलकर सामने आए। अम्बेडकर का विचार था कि अछूतों के बीच खुद भी अनेक उपजातियाँ मौजूद है अछूतों को अपने बीच ऊँच–नीच के भेद को मिटा देना चाहिए।[31]

डॉ. अम्बेडकर सन् 1923 में लन्दन से भारत लौट आये। भारत वापस लौटने पर अम्बेडकर ने बम्बई में बैरिस्टरी शुरू कीं प्रतिभा के बावजूद अम्बेडकर की जाति उनके मार्ग का कंटक थी। इसके कारण उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। सन् 1924 का वर्ष भारतीय राजनीति के लिए घटनापूर्ण वर्ष था। इस वर्ष वीर सावरकर तथा महात्मा गाँधी दोनों जेल से छूटे और उन्होंने दलितों की स्थिति सुधारने का बीड़ा उठाया। अम्बेडकर ने अपने कुछ सहयोगियों की मदद से बहिष्कृत, हितकारिणी सभा की स्थापना की।[32] अम्बेडकर स्वयं इस संस्था की प्रबंध समिति के अध्यक्ष थे। इस संस्था का प्रमुख दलितों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुधार करना था। इस समय तक अम्बेडकर दलित वर्गों के एक प्रमुख नेता के रूप में ख्याति प्राप्त कर चुके थे। उनका जन्म और पालन–पोषण दलितों के बीच हुआ था। अम्बेडकर को अपनी बिरादरी के लोगों की समस्याओं और शिकायतों की पूरी जानकारी थी। उन्हें इस कठिनाइयों का व्यक्तिगत अनुभव था। दलित–सेवा डॉ. अम्बेडकर के जीवन का मिशन बन गया था। उन्होंने बम्बई में ''अन्त्यज संघ'' की स्थापना की। इसका मुख्य उद्देश्य अछूतों की सेवा करना था। संघ चंदा इकट्ठा करके अछूत बच्चों की पढ़ाई–लिखाई में खर्च करता। लोगों में शिक्षा के प्रति आकर्षण पैदा करना, शिक्षार्थियों को छात्रावास की सुविधा प्रदान करना, दलितों की बस्तियों में वाचनालय खोलना आदि इस संघ के प्रमुख कार्य थे।[33] इसने दलित समाज में सामाजिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक चेतना का संचार किया। ''बहिष्कृत हितकारिणी सभा'' के प्रमुख उद्देश्य भी दलित समाज में सामाजिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक उत्थान के निम्नलिखित मूल उद्देश्य इस प्रकार से थे कि दलित–वर्ग में शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार करना, छात्रावास आदि की स्थापना करना और उन साधनों का विकास करना जो उनके उत्थान के लिए समयानुसार आवश्यक हो। दलित–वर्ग की बस्तियों में वाचनालय, क्रीड़ा–केन्द्र और विद्या–केन्द्र स्थापित करके संस्कृति का प्रसार करना। औद्योगिक तथा कृषि विद्यालय खोलकर दलित–वर्ग की आर्थिक उन्नति के प्रयास करना। दलित–वर्गों की विभिन्न कठिनाइयों का प्रतिनिधित्व एवं निवारण करना। अछूतोद्धार आन्दोलन को आगे बढ़ाना। संस्था ने अछूतों के बीच व्याप्ल अनेक सामाजिक कुरीतियों को भी दूर करने की दिशा में ठोस कदम उठाये। संस्था ने अछूतों को जुआ तथा शराबखोरी से दूर रहने की प्रेरणा दी। अम्बेडकर ने दलितों में जागृति लाने के लिए महाराष्ट्र के अनेक स्थानों में सार्वजनिक सभाएँ आयोजित की और उनमें भाषण दिए।[34]

बम्बई विधान परिषद के सदस्य

सन् 1927 में अम्बेडकर को बम्बई विधान परिषद का सदस्य मनोनीत किया गया। बम्बई के दलित वर्गों ने उनका सम्मान किया और उन्हें रुपयों की थैली भेंट की। अम्बेडकर ने यह रकम बहिष्कृत हितकारिणी सभा को भेंट कर दी।[35] बम्बई विधान परिषद में अम्बेडकर ने अच्दा नाम कमाया। 24 फरवरी, सन् 1927 के दिन अम्बेडकर ने बम्बई विधान परिषद में अपना पहला भाष दिया और वह भी बजट पर। अम्बेडकर ने बचजट की आलोचना करते हुए कहा कि वह भी बजट पर। अम्बेडकर ने बजट की आलोचना करते हुए कहा कि वह अन्यायकारी है और उसमें जन कल्याण के कार्यक्रमों की ओर आवश्यक ध्यान नहीं दिया गया है। अम्बेडकर के इस पहले भाषण से ही बम्बई विधान परिषद में धाक जम गई। अम्बेडकर ने नशाबंदी और शिक्षा जैसे विषयों पर भी विधान परिषद में महत्वपूर्ण भाषण दिए।[36]

महाड़ सत्याग्रह

अम्बेडकर के जीवन और दलित आंदोलन के इतिहास मे ंमहाड़ सत्याग्रह का महत्वपूर्ण स्थान है। महाराष्ट्र स्थान के महान समाज सुधारक श्री एस.के.बोले के प्रयत्न स्वरूप सन् 1923 मे ंबम्बई में काउन्सिल में यह प्रस्ताव आया ''सरकार द्वारा या सार्वजनिक धन से संचालित संस्थाएँ–अदालत, विद्यालय, चिकित्सालय, कार्यालय, धर्मशाला, कुआँ, जलाशय, पनघट, तालाब–इन स्थानों में प्रवेश करने और उनका उपयोग करने का अधिकार सरकार अछूत वर्गों को भी प्रदान करे।[37] इस प्रस्ताव को काउन्सिल ने 4 अगस्त, सन् 1923 को पारित कर दिया और सरकार ने सब प्रमुख विभागों और स्थानीय बोर्डों को यह आदेश जारी कर दिये थे कि अछूतों को सार्वजनिक स्थानों का प्रयोग करने दिया जाये। इसी आदेशकी पालना में कोलबा जिले की महाड़ नगरपालिका ने सन् 1924 में चॉदार तालाब से पानी भरने का अधिकार अछूतों को दे दिया था। परन्तु, वहाँ के संवर्ण हिन्दु नहीं चाहते थे कि अछूत लोग तालाब के पानी का प्रयोग करें।[38] कोलाब जिले के दलितों ने 19 और 20 मार्च, सन् 1927 को महाड़ में एक सम्मेलन करने का निश्चय किया। सम्मेलन में 10,000 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। ये प्रतिनिधि महाराष्ट्र और गुजरात के सभी जिलों से आए थे।[39] इस सम्मेलन में अम्बेडकर ने अध्यक्ष पद से भाषण दिया और कहा कि दलितों की अवनति का एक प्रधान कारण यह है कि उन्हें

[29] उपरोक्त, पृष्ठ 40

[30] लोखण्डे, जी.एस. भीमराव रामजी अम्बेडकर; अ स्टडी इन सोशल डेमोक्रेसी, इन्हेलेम्चुअल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, सन् 1977, पृष्ठ 23

[31] उपरोक्त, पृष्ठ 27

[32] सिंह, आर.जी. भारतीय दलितों की समस्यायें एवं उनका समाधान, (मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल), सन् 1986, पृष्ठ 66

[33] अम्बेडकर, बी.आर., डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर राइटिंगन एण्ड स्पीचेज (खण्ड 5), (गवर्नमेन्ट ऑफ महाराष्ट्र पब्लिकेशन, बम्बई) पृष्ठ 98

[34] कीर, धनन्जय डॉ. अम्बेडकर : लाइफ एण्ड मिशन्स (पॉपुलर प्रकाशन–बाम्बे) सन् 1981, पृष्ठ 19

[35] पाक्षिक पत्र–बहष्किृत भारत; बाम्बे 2 मार्च, सन् 1927

[36] कीर, धनन्जय डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर जीवन–चरित, पूर्वोक्त, पृष्ठ 65

[37] चाण्डी, के.टी. सोशल जस्टिस एण्ड बेसिक रिक्वायरमेंट्स फॉर इक्जिस्टेन्स लीगल न्यूज एण्ड न्यूज 5 (12) सन् 1991, पृष्ठ 391–93

[38] कीर, धनन्जय डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर जीवन–चरित, पूर्वोक्त, पृष्ठ 52

[39] उपरोक्त, पृष्ठ 53

सेना में पर्याप्त संख्या में नौकरी नहीं मिलती। उन्होंने दलितों के सुधार के लिए त्रिसुत्री कार्यक्रम रखा : मरे जीव का मांसाहार करना बंदि करो। झूठे भोजन को सवीकार मत करो। ऊँच–नीच की कल्पना मन से निकाल कर ऊँचे लोगों का सा रहन–सहन अपनाओ। अम्बेडकर ने अछूतों को खेती करने का सुझाव दिया। उनका भाषण अछूतों के लिए जागृति का शंखनाद था। सम्मेलन में अनेक प्रस्ताव पास किए और संवर्ण हिन्दुओं से प्रार्थना की कि वे दलितों को उनके नागरिक अधिकार दिलाएँ। सम्मेलन की विषय–समिति ने तय किया कि सभी उपस्थित लोग चवदार तालाब जाएँ और उसका पानी पिएँ। प्रतिनिधि शांतिपूर्वक जुलूस की शक्ल मं चवदार तालाब पर गए। दलितों के इतिहास में यह रोमांचकारी क्षण था।

तालाब पहुँचकर सबसे पहले अम्बेडकर ने और इसके बाद शेष जन समुदाय ने तालाब का मीठा पानी पिया। इसके बाद प्रतिनिधि सभा–स्थल पर वापस लौट आए। इस घटना के दो घंटे बाद कुछ संवर्ण हिन्दुओं ने सभा–स्थल पर धावा बोल दिया और दलित प्रतिनिधियों को मारा। लेकिन अम्बेडकर ने धैर्य से काम लिया और प्रतिनिधियों को हिंसात्मक कार्यवाही करने से रोका। महाड़ की घटना ने सारे भारतवर्ष में वाद–विवाद पैदा कर दिया।[40] वीर सावरकर ने अम्बेडकर के आंदोलन का समर्थन किया। उन्होंने कहा कि छुआदूत की जितनी निंदा की जाए कम है। वह समाज का कोड़ हैं उसका जितना जल्दी अंत कर दिया जाए, उतना ही वह देश के हित में होगा। संवर्ण हिन्दुओं का यह कर्तव्य है कि वे दलितों को सारे मानवीय अधिकार प्रदान करें।[41] महाड़ सत्याग्रह का अछूतों पर दूर–व्यापी प्रभाव पड़ा। सरकार ने दलित वर्गों की शिकायतों पर अधिक गंभीरतापूर्वक विचार करना आरम्भ किया। अम्बेडकर दलितों के निर्विवाद नेता बन गए। उनका यश सारे देश में फैल गया। चवदार तालाब के पानी के उपयोग पर अदालत में लम्बे समय तक मुकदमा चला। सन् 1937 में बम्बई उच्च न्यायालय ने दलितों के पक्ष में अपना निर्ण सुनाया। इस तरह दलितों को न्याय मिला और उनके महाकाव्य का एक गौरवपूर्ण अध्याय पूरा हुआ। यह अम्बेडकर की विजय थी।[42]

साइमन कमीशन

ब्रिटिश सरकार ने सन् 1927 में भारत में साइमन कमीशन भेजा कमीशन का लक्ष्य सन् 1919 के भारतीय शासन अधिनियम की परीक्षाकरना और उसमें संशोधन सुझाना था। चूँकि कमीशन में एक भी भारतीय सदस्य नहीं था, अतः भारतीय लोकमत के सभी वर्गों ने उसका बहिष्कार किया।[43] भारत के प्रत्येक प्रांत की विधान परिषद ने एक–एक समिति निर्वाचित की। प्रत्येक समिति को साइमन कमीशन के साथ काम करना था, कमीशन को हर प्रकार की सहायता और सहयोग देना था। बम्बई की विधान परिषद ने अन्यान्य सदस्यों के साथअ बेडकर को भी इस समिति का सदस्य चुना।[44]

शिक्षा का प्रसार पर बल

अम्बेडकर इस बात को अच्छी तरह समझते थे कि दलितों में शिक्षा का अभाव है और इस एक कमी के कारण वे सामाजिक उन्नति के रास्ते पर नहीं बढ़ पा रहे हैं। उन्होंने अपने लोगों की शैक्षिक उन्नति के लिए दलित वर्ग शिक्षा समाज (डिप्रेस्ड क्लासेज एजूकेशन सोसायटी) की स्थापना की।[45] उसके प्रयत्नों से सरकार ने दलित छात्रों के लाभ के लिए पाँच छात्रावासों की स्थापना की। बम्बई सरकार ने बम्बई प्रेसीडेन्सी के दलित वर्गों तथा आदिवासियों की शैक्षिक, आर्थिक और सामाजिक अद्योगति के कारणों की जाँच–पड़ताल करने के लिए एक समिति का गठन किया। अम्बेडकर इस समिति के एक सदस्य थे। उन्होंने समिति की ओर से बलगाम, खानदेश और नासिक जिलों का भ्रमण यिका। मार्च सन् 1930 में समिति ने अपनी रिपोर्ट पेश की। समिति ने सिफारिश की कि यदि संवर्ण हिन्दुओं तथा दलितों के बच्चे एक ही स्कूल में पढ़े तो इससे उनके बीच भाई–चारे की भावना बढ़ेगी और अलगाव की प्रवृत्ति कम होगी।[46]

नासिक सत्याग्रह

नासिक हिन्दुओं का एक तीर्थस्थल है। यहाँ गोदावरी नदी के तट पर 'कालाराम' मन्दिर है जिसमें राम की काले पत्थर की मूर्ति प्रतिष्ठित है। रामनवमी के दिन यहाँ बड़ा भारी मेला लगता है। श्रद्धालु गोदावरी में स्नान करके 'काले राम' की रथ यात्रा में रथ को छूकर अपने को धन्य मानते है। दलितों को पुनीत कार्य से वंचित रखा हुआ था।[47] वे सन् 1929 से प्रयत्न कर रहे थे कि उन्हें भी रथ छूने दिया जाये, गोदावरी के मुख्य घाट पर स्नान करने दिया जाये, और मन्दिर में 'काला राम' के दर्शन करने दिए जावें। महाड़ सत्याग्रह की चर्चाएँ नासिक तक पहुँच चुकी थी।

वहाँ के वंचितों ने डॉ. अम्बेडकर को उनके अधिकारों को सुलभ कराने हेतु संघर्ष में उनका नेतृत्व करने को आमंत्रित किया। अम्बेडकर के आवाहन पर 15,000 स्वयं सेवक नासिक में एकत्रित हुए। 3 मार्च सन् 1930 को कालाराम मंदिर के सामने अहिंसक आंदोलन आरम्भ किया। यह आंदोलन पाँच वर्षों तक चलता रहा और दोनों पक्षों के बीच कोई समझौता नहीं हो सका। अम्बेडकर ने आगे की कार्यवाही पर विचार करने के लिए 13 अक्टूबर, सन् 1935 को नासिक के नजदीकी शहर पिओला में दलितों के एक सम्मेलन का आयोजन किया।[48] अम्बेडकर ने अपने ऐतिहासिक भाषण में दलितों की दयनीय स्थिति का वर्णन किया। वस्तुस्थिति के सभी पहलुओं पर विचार करने के बादसम्मेलन ने नासिक सत्याग्रह बंद करने का और अपनी सारी

---

[40] सिंह, आर.जी., भारतीय दलितों की समस्यायें एवं उनका समाधान (मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल) सन् 1986, पृष्ठ 29

[41] सिन्हा, ए.पी. पर्सपैक्टिव ऑन सोशल जस्टिस कैपिटल, दिल्ली, सन् 1991, पृष्ठ 9

[42] उपरोक्त, पृष्ठ 11

[43] सन् 1919 के भारतीय शासन अधिनियम में व्यवस्था थी कि अधिनियम लागू होने के 10 साल बाद उसके क्रियान्वयन की जाँच की जाये और तय किया जाए कि भारत को उत्तरदायी शासन की दिशा मं कितना आगे बढ़ाया जाए। कानून के इस प्रश्न की जाँ सन् 1929 में होनी चाहिए थी। सनृ 1929 में इंग्लैण्ड में आम चुनाव होने वाले थे। उम्मीद थी कि इन चुनावों में मजदूर दल जीत सकता था। ब्रिटेन का सत्तारुढ़ अनुदार दल यह नहीं चाहता था कि वह भारत के राजनीति कभविष्य का निग्रय अपने विरोधी के हाथों में छोड़ दे। इसलिए सन् 1919 के भारतीय शासन अधिनियम के क्रियान्वयन की पड़ताल करने के लिए वैधानिक कमीशन की स्थापना निर्धारित समय से दो साल पहले कर दी गई।

[44] वर्ष हरदान, डॉ. भीमराव अम्बेडकर जीवन और दर्शन पूर्वोक्त, पृष्ठ 26

[45] अम्बेडकर, बी.आर. एनिहिलेशन ऑफ कास्ट, (थैकर एण्ड कम्पनी, बाम्बे) सन् 1937, पृष्ठ 69

[46] उपरोक्त, पृष्ठ 71

[47] हर्ष हरदान, डॉ. भीमराव अम्बेडकर जीवन और दर्शन, पूर्वोक्त, पृष्ठ 30

[48] निम, डी.आर, अम्बेडकर जीवन दर्शन, पूर्वोक्त पृष्ठ 46

शक्ति दलितों के सामाजिक, आर्थिक शैक्षिक और राजनीतिक अभ्युत्थान में लगाने का निश्चय किया।[49]

दलित वर्ग कांग्रेस

8 अगस्त, सन् 1930 को नागपुर में दलित वर्ग कांग्रेस पर पहला अधिवेशन हुआ। इस अधिवेशन के अध्यक्ष अम्बेडकर थे। डॉ. अम्बेडकर ने भारतवासियों को स्वयं शासित होने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने बताया कि अंग्रेजी शासनकाल में उन्तीस महाकाल पड़े, जिनमें तीन करोड़ लोगों ने प्राण गँवाये।[50] अतः उन्होंने दलित–वर्ग को दासता की बेडियाँ स्वराज्य प्राप्त करने का प्रयास करने की राय दी। डॉ. अम्बेडकर ने भारत की राजनीतिक स्वतंत्रता का समर्थन खुलकर किया। इससे दलित–वर्ग को नई दिशा मिली। नागपुर अधिवेशन की यह विशेषता रही कि दलित–वर्ग ने अपने मानवीय एवं सामाजिक अधिकारों क लिए संघर्ष करने के साथ–साथ देश की आजादी के आन्दोलन को भी समर्थन दिया।[51] अब दलित–वर्ग अनुभव करने लगा था कि ब्रिटिश शासन न उनके हित में है और न राष्ट्र के। इस तरह डॉ. अम्बेडकर ने एक साथ मानवता, दलित समाज और राष्ट्र की सेवा का व्रत लिया।[52] डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने स्पष्ट कह दिया था कि भारत की आजादी के प्रति वे पीछे नहीं है। किन्तु वे देश की आजादी के साथ–साथ अपने समुदाय की आजादी भी चाहते हैं। उन्होंने कहा था–''हमारे देश को बार–बार अपनी आजादी क्यों खोनी पड़ी? कारण यह था कि हमारा सारा देश हमले के खिलाफ खड़ा नहीं हो सका।[53] यूरोप में जब कभी युद्ध होते थे तो उसमें जो सैनिक मरते थे, उनकी जगह पर तुरन्त नये सैनिक आ जाते थे। वहाँ पूरा देश लड़ता था, समाज का महज एक हिस्सा नहीं। भारत में जब क्षत्रिय हार जाते थे तो उनकी जगह नये सैनिक नहीं आते थे। सार्वजनिक सैनिक भर्ती नहीं होते थे; क्योंकि चातुर्वर्ण्य की घृणित व्यवस्था थी कि युद्ध में केवल क्षत्रिय ही लड़ेगे। इसी कारण देश बार–बार गुलाम हुआ।[54] अगर हमें शस्त्र– धारण के अधिकार से वंचित न किया गया होता तो यह देश कभी अपनी आजादी न खोता और कोई भी हमलावर इस पर विजय हासिल करने में कामयाब न होता''।

प्रथम गोलमेज सम्मेलन (नवम्बर–दिसम्बर, 1930)

जिन दिनों भारत में गाँधीजी का सविनय अवज्ञा आन्दोलन जोर पकड़ रहा था, ब्रिटिश सरकार ने भारत के नए संविधान के सिद्धांतों पर विचार करने के लिए लंदन में गोलमेज परिषद का आयोजन किया। इंग्लैण्ड के सम्राट ने सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए आशा प्रकट की कि वहाँ पर सर्वसम्मति से भारत के भावी रूप पर विचार हो सकेगा। यह सम्मेलन संवैधानिक सभा के रूप में नहीं हो रहा था और न मतदान द्वारा लिये गये निर्णय का फैसला करना था। इसका उद्देश्य उन मुद्दों पर विचार करना था, जिनसे भारत क हितों के लए प्रयत्न किये जा सकें और संविधान बनाने में मदद मिल सके। इस सम्मेलन के अध्यख मैक्डॉनल्ड चुने गये। अम्बेडकर को दलित वर्गों का प्रतिनिधित्व करने के लिए परिषद में भाग लेने का आमंत्रण मिला। परिष्झद में कुल 89 प्रतिनिधि उपस्थित थे। इनमें से 57 प्रतिनिधि ब्रिटिश भारत का प्रतिनिधित्व करते थे। 16 प्रतिनिधि भारतीय रियासतों से गये थे।[55] बाकी 16 व्यक्ति ब्रिटिश संसद के सदस्य थे और वे इंग्लैण्ड के तीनों राजनीतिक दलों–कंजर्वेटिव पार्टी, लेबर पार्टी और लिबरल पार्टी का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। भारतीय प्रतिनिधि वायसराय ने चुने थे और वे विभिन्न जातियों, वर्गों और हितों के लिए बोले। प्रधानमंत्री मैकडानल्ड ने प्रस्तावित संविधान के बुनियादी सिद्धान्तों का निरूपण किया। परिषद् को इन सिद्धान्तों के दायरे में ही विचार–विनिमय करना था। ब्रिटिश प्रधानमंत्री ने स्पष्ट किया कि नया संविधान संघात्मक होगा। ब्रिटिश सरकार केन्द्र और प्रांतों में उत्तरदायी शासन की स्थापना करने के लिए तैयार थी। हाँ, संक्रमण–काल की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर वह अपने पास कुछ विशेष अधिकार रखना चाहती थी। ब्रिटिश प्रधानमंत्री ने यह बिल्कुल स्पष्ट नहीं यिका कि संक्रमण–काल कब तक चलेगा?[56] वास्तव में संक्रमण कालीन विशेष अधिकारों की बात तो ब्रिटिश सरकार की एक चाल थी जिसके द्वारा वह अपने हाथों में असली ताकत सुरक्षित रखना चाहती थी। अम्बेडकर ने हपली गोलमेज परिषद के अवसर पर अनेक ब्रिटिश राजनीतिज्ञों से भेंट की और उन्हें अछूतों की स्थिति से अवगत कराया। ब्रिटिश मजदूर नेता लासंबेटी ने उन्हें भोजन पर आमंत्रित किया। अम्बेडकर ने अछूतों के राननीतिक अधिकारों के सम्बन्ध मेंएक विज्ञप्ति जारी की और उसकी प्रतियाँ गोलमेज परिषद के सदस्यों के बीच वितरित कीं गोलमेज परिष्झद में अपने भाषण में अम्बेडकर ने कहा कि अंग्रेजों ने अछूतों के साथ विश्वासघात किया है।[57] उनके भाषण की अनेक समाचार–पत्रों ने सराहना की। परिषद में बड़ौदा नरेश सयाजीराव गायकवाड़ भी उपस्थित थे। उन्होंने अम्बेडकर के छात्रजीवन में उनकी सहायता की थीं। गायकवाड़ ने अम्बेडकर को चाय पार्टी पर आमंत्रित किया। पहली गोलमेज परिषद में अम्बेडकर ने भारतीय दलितों की समस्या को पहली बार संसार के सामने उजागर किया। परिषद समाप्त होने पर 22 फरवरी, सन् 1931 को अम्बेडकर लंदन से बम्बई पहुँच गए[58] जहाँ उनका भव्य स्वागत हुआ।

द्वितीय गोलमेज सम्मेलन

द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में आमन्त्रित किये गये प्रतिनिधियों की सूची जुलाई, सन् 1931 के तृतीय सप्ताह में जारी हुई आमन्त्रित प्रतिनिधियों में डॉ. भीमराव अम्बेडकर, श्रीनिवास शास्त्री, सर तेजबहादुर सप्रू, एम.आर. जयकर, सर चमनलाल सीतलवाड़, पं. मदन मोहल मालवीय, सरोजिनी नायडू, महात्मा गाँधी, मिर्जा इस्माइल, मोहम्मद अली जिन्ना, रामास्वामी मुदालियार प्रमुख थे।[59] बम्बई के गोटवले एज्यूकेशन सोसाइटी हाल में 19 अप्रेल, सन् 1931 को ऑल इण्डिया दलित नेताओं की सभा हुई। इसमें सर्वसम्मति से डॉ. अम्बेडकर को दलितों का नेता चुना गया। सभी ने माँग की कि डॉ. अम्बेडकर को फेडरल स्ट्रक्चर कमेटी का प्रतिनिधि नामजद किया जाये। द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में उन्हें फेडरल स्ट्रक्चर कमेटी का सदस्य मनोनीत किया गया था, जिसका सीधा सम्बन्ध नये

[49] अम्बेडकर, बी.आर. एनिहिलेशन ऑफ कास्ट (थैंकर एण्ड कम्पनी, बम्बई) सन् 1937 पृष्ठ 78, सिंह, डॉ. राम गोपाल सामाजिक न्याय एवं दलित संघर्ष, राजस्थान (हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर) सन् 1994, पृष्ठ 64

[50] गुप्त, विश्व प्रकाश, गुप्ता मोहिनी, भीमराव अम्बेडकर व्यक्ति और विचार, पूर्वोक्त, पृष्ठ 49

[51] उपरोक्त, पृष्ठ, 50

[52] कीर, धनन्जय, डॉ. बाबा साहब अम्बेडकर जीवन–चरित, पूर्वोक्त, पृष्ठ 140

[53] निम, डी.आर, अम्बेडकर जीवन दर्शन, पूर्वोक्त पृष्ठ 53

[54] उपरोक्त, पृष्ठ, 53

[55] गुप्त, विश्व प्रकाश, गुप्ता मोहिनी, भीमराव अम्बेडकर व्यक्ति और विचार, पूर्वोक्त, पृष्ठ 52

[56] अम्बेडकर, बी.आर. द अनटचेवल्स : हू वेयर दे एण्ड हाउ दे बिकेम अनटचेबल्स, (अमृत बुक कम्पनी, नई दिल्ली) सन् 1948, पृष्ठ 69

[57] उपरोक्त, पृष्ठ,73

[58] सिंह, आर.जी. भारतीय दलितों की समस्यायें एवं उनका समाधान (मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल) सन् 1986, पृष्ठ 47

[59] हर्ष, हरदान, डॉ. भीमराव अम्बेडकर जीवन और दर्शन, पूर्वोक्त, पृष्ठ 45

संविधान का प्रारूप बनाने से था। इस अवसर पर उन्हें ढेरों बधाई सन्देश मिले थे। ये बधाई सन्देश भारत के कोने–कोने से ही नहीं, अपितु विदेशों से भी आये थे। डॉ. अम्बेडकर के विरोधी पक्ष के समाचार–पत्र जो कभी उन पर अपशब्दों की बौछार किया करते थे, अब उनकी देशभक्ति और मानव के हितों के प्रति प्रतिबद्धता की सराहना करने लगे थे।[60] 15 अगस्त सन् 1931 को मुलतान जहाज से लन्दन के लिए रवाना हो गये और 29 अगस्त को पहुँच गये। द्वितय गोलमेज सम्मेलन के पहले ब्रिटेन में सामान्य अगस्त को पहुँच गये। द्वितीय गोलमेज सम्मेलन के पहले ब्रिटेन में सामान्य सत्ता परिवव्रन हो चुका था। यहाँ लेबर पार्टी की जगह राष्ट्रीय सरकार बनी थी। प्रधानमंत्री रेमसे मेक्डोनल्ड ही बने रहे थे। सम्मेलन 7 सितम्बर, सन् 1931 को प्रारम्भ हुआ, जिसमें सबसे महत्वपूर्ण कार्य फेडरल स्ट्रक्चरल कमेटी तथा माइनोरिटिज कमेटी को करना था। महात्मा गाँधी ने 15 सितम्बर को संघ योजना समिति के समक्ष बोलते हुए कहा– ''काँग्रेस न केवल मुसलमानों, सिखों और पारसियों का प्रतिनिधित्व करती है, बल्कि अछूतों का भी नेतृत्व करती है, क्योंकि छूआछूत मिटाने की योजना काँग्रेस के राजनीतिक मंच पर लाई जा चुकी हैं काँग्रेस सभी भारतीय पुरुषों का ही नहीं, वरन् समस्त नारियों का प्रतिनिधित्व करती है। चूँकि वह (गाँधी) स्वयं काँग्रेस के प्रमुख प्रतिनिधि है, इसलिए यह समझना चाहिए कि वह सम्पूर्ण भारतीय राष्ट्र के प्रमुख प्रतिनिधि है।''[61] 15 सितम्बर, सन् 1931 को फेडरल स्ट्रक्चर समिति में डॉ. अम्बेडकर ने अपना भाषण दिया। अपने भाषण से उन्होंने सिद्धकर दिया कि वे जन–जन के प्रतिनिधि थे। उन्होंने राजा– महाराजाओं की निरंकुशता पर प्रहार किया और बीकानेर महाराजा को उसकी यथास्थिति से अवगत करवाया।[62] डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने कहा कि सिकी भी रियासत को संघ की सदस्यता यों ही नहीं दे दी जानी चाहिए। सदस्यता प्राप्त करने के लिए रियासत को यह प्रमाणित करना होगा कि उसके पास नागरिकों को सभ्य जीवन की सुविधाएँ देने के लिए आवश्यक साधन तथा क्षमताएँ हैं। संघीय सभा के लए रियासतों से भेजे जाने वाले प्रतिनिधियों का जनता द्वारा चुनाव होना चाहिए न कि राजाओं द्वारा उनका नामांकन। उन्होंने स्पष्ट कहा कि नामांकन का सिद्धान्त उत्तरदायी सरकार के सिद्धान्त के सर्वथा विरुद्ध है। डॉ. अम्बेडकर का एक रियासत को संघ की सदस्यता एक विषय पर भाषण रियासतों की जनता के जनतन्त्रीय अधिकारों की रक्षा की दिशा में श्रेष्ठ भाषण था। उनके क्रांतिकारी भाषण से सभी राजा–महाराजाओं को झटका लगा। इस भाषण के बाद के वक्ताओं ने अपने–अपने भाषणों में उक्त विषय के सन्दर्भ में अपने–अपने विचार रखे थे। कुछ वक्ताओं ने डॉ. अम्बेडकर के विचरों का समर्थन किया तो कुछ ने विरोध। इससे विषय–स्थिति बिल्कुल स्पष्ट हो गई थी।[63] डॉ. भीवराम अम्बेडकर 5 दिसम्बर, सन् 1931 को लन्दन से अमेरिका के लिए रवाना हो गये। वे वहाँ अपने पुराने प्रोफेसरों से मिले। वहाँ वे एक महीना रहे और उत्कृष्ट साहित्य की अनेक पुस्तकें कई पेटियों में भरकर भारत भेजी । डॉ. अम्बेडकर अमेरिका से फिर लन्दन लौटे और 29 जनवरी, सन् 1932 को बम्बई पहुंचे। उनका अभूतपूर्व सम्मान हुआ। उस दिन परेल में एक विशाल जनसभा हुई। विशाल जन–समूह का स्नेह और श्रद्धा देखकर वे गद्‌गद् हो गये। उन्होंने कहा – ''मुझे विश्वास है कि हिन्दुओं की भावी पीढ़ियाँ जब गोलमेज सम्मेलन का इतिहास पड़ेगी तो मेरी सेवाओं की सराहना करेगी।''[64]

साम्प्रदायिक निर्णय और पूना समझौता :

गोलमेज परिषद के पहले दो अधिवेशन सांप्रदायिक समस्या को सुलझाने में असफल रहे थे। दूसरी गोलमेज परिषद के अंत में ब्रिटिश प्रधानमंत्री मैकडानल्ड ने प्रतिनिधियों से यह बचन ले लिया था कि यदि साम्प्रदायिक समस्या का कोई सर्वसम्मत हल नहीं निकला तो ब्रिटिश सरकार इस विषय में अपनी कोई कामचलाऊ योजना लागू करेगी। 8 अगस्त, सन् 1932 को मैकडॉनाल्ड ने साम्प्रदायिक समस्या के बारे में ब्रिटिश सरकार का निर्णय प्रकाशित किया।[65] यह निर्णय साम्प्रदायिक निर्णय के नाम से विख्यात है। मैकडोनाल्ड ने अपना निर्णय प्रकाशित करते समय यह आश्वासन अवश्य दिया था कि यदि सरकार को यह विश्वास हो जाएगा कि विभिन्न सम्प्रदायों को कोई दूसरी योजना स्वीकार है तो वह ब्रिटिश संसद से सिफारिश करेगी कि साम्प्रदायिक योजना के बदले में नई योजना स्वीकार कर ली जाए। साम्प्रदायिक निर्णय में पहले से चली आ रही पृथक निर्वाचनों की पद्धति को बहाल रखा। इस योजना का सबसे आपत्तिजनक अंश यह था कि इसमें दलित वर्गों को एक विशिष्ट अल्पसंख्यक वर्ग मान लिया गया था। उन्हें पृथक निर्वाचक पद्धति द्वारा अपने प्रतिनिधि चुनने का और साधारण निर्वाचन–क्षेत्रों में एक अतिरिक्त मत का अधिकार दिया गया। साम्प्रदायिक निर्णय भारत के राष्ट्रवादी आन्दोलन को कमजोर करने का कुचक्र था। साम्प्रदायिक निर्णय के दलित वर्गों से सम्बन्ध रखने वाले प्रावधान गाँधीजी को सहन नहीं हुए। उन्हें लगा कि इस निर्णय से तो हिन्दु जाति टुकड़ों में बंट जाएगी। उन्होंने इस योजना को रद्‌द करने के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा दी और आमरण अनशन करने का निश्चय किया। वे उस समय पूना की यरवदा जेल में थे। उन्होंने 20 सितत्बर, सन् 1932 को जेल में ही अपना उपवास प्रारम्भ कर दिया।[66] पंडित मदन मोहन मालवीय, राजेन्द्र प्रसाद और एम.एस.राजा के प्रयत्नों से एक समझौता–सूत्र तैयार किया गया जिसे महात्मा गाँधी ने स्वीकार किया और जिस पर अम्बेडकर ने भी हस्ताक्षर कर दिए। इस सूत्र के अनुसार अछूतों को साम्प्रदायिक निर्णय में दिये गये स्थानों से भी अधिक स्थान दिए गए।[67] लेकिन अछूतों को अपने प्रतिनिधि अलग से चुनने का अधिकार नहीं था। गाँधी और अम्बेडकर का यह समझौता पूना समझौता के नाम से विख्यात है और यह 26 सितम्बर, सन् 1932 को अंगीकार किया गया था। उसी दिन महात्मा गांधी ने अपना उपवास तोड़ दिया। पूना समझौता अम्बेडकर की बहुत बड़ी उपलब्धि थी।[68]

तीसरी गोलमेज :

[60] उपरोक्त, पृष्ठ, 47
[61] उपरोक्त, पृष्ठ, 50
[62] भटनागर, राजेन्द्र मोहन, डॉ. अम्बेडकर व्यक्तित्व और कृतित्व पूर्वोक्त, पृष्ठ 103
[63] उपरोक्त, पृष्ठ 105
[64] धवन, शकुन्तला, डॉ. अम्बेडकर : अपोस्हल ऑफ सोशल जस्टिस, योजना–15 अप्रेल, पृष्ठ 12–13
[65] अग्निहोत्री रामाशंकर, भारत रत्न डॉ. अम्बेडकर (दिव्य ज्योति प्रकाशन, जयपुर) सन् 1995, पृष्ठ 98
[66] बाली, एल. आर., डॉ. अम्बेडकर और भारतीय संविधान भीम–पत्रिका प्रकाशन, जालंधर, सन् 1980, पृष्ठ 16
[67] सहारे, एम.एल., डॉ. भीमराव अम्बेडकर : हिज लाइफ एंड मिशन, नेशनल कौसिंल ऑफ एजुकेशन रिसर्च एंड ट्रेनिंग, नई दिल्ली, सन् 1987, पृष्ठ 11
[68] उपरोक्त, पृष्ठ 34

अम्बेडकर ने सन् 1932 के अंत में तीसरी गोलमेज परिषद में भी भाग लिया। श्रमिक दल ने परिषद को अपना सहयोग देना बंद कर दिया था। भारत का प्रतिनिधित्व कट्टर राजभक्तों ने किया था। भारत के सभी भावी संविधान के बारे में मोटी–मोटी बातें तो पहले ही तय हो चुकी थी। परिषद का काम तो सिर्फ यह था कि वह पहले से निर्णीत बातों की पुष्टि कर दे और कुछ बातों को विस्तारपूर्वक तय कर दे।[69] परिषद ने केन्द्र में भारत को उत्तरदायी शासन नहीं दिया। मार्च सन् 1993 में ब्रिटिश सरकार ने गोलमेज परिषदों के निर्णयों के आधार पर अपना श्वेत पत्र प्रकाशित किया जो सन् 1935 को भारतीय शासन अधिनियम की नींव बना। परिषद की कार्यवाही समाप्त होते ही अम्बेडकर भारत लौट आए।[70]

श्वेत–पत्र :

ब्रिटिश सरकार द्वारा किए गए श्वेत पत्र में जो प्रस्ताव पेश किए गए थे, उन पर ब्रिटिश संसद के दोनों सदनों की संयुक्त समिति को विचार करना था। अम्बेडकर को इस संयुक्त समिति में काम करने का आमंत्रण दिया गया। अम्बेडकर 24 अप्रेल, सन् 1933 को लंदन के लिए रवाना हुए और 8 जनवरी, सन् 1934 को संयुक्त समिति में अपना काम पूरा करने के बाद स्वदेश वापस लौटे।[71]

अम्बेडकर की पत्नी रमाबाई आदर्श भारतीय महिला थी। उन्होंने अम्बेडकर के संघर्ष कालीन दिनों में कष्ट ही कष्ट भोगे थे। अर्थाभाव तथा उचित चिकित्सा न होने के कारण उनके कई बच्चों की अकाल मृत्यु हो गई थी। रमाबाई का स्वास्थ्य बराबर गिरता जा रहा था। गृहस्थी की सारी चिन्ताओं का बोझ उसने अपने सिर पर उठा रखा था। समय के साथ अम्बेडकर के सार्वजनिक जीवन का दायरा बढ़ता गया। वे घर–गृहस्थी की ओर कम ही ध्यान दे पाते थे। यह सारी जिम्मेदारी रमाबाई को निभानी पड़ती थी।[72] अम्बेडकर ने दादर में अपने लिए एक बड़ा मकान बनवाया और उसका नाम राजगृह रखा था। अब अम्बेडकर परिवार के सुख के दिन आने लगे थे। तभी 27 मईं, सन् 1935 के दिन रमाबाई का निधन हो गया।[73]

गवर्नमेंट लॉ कॉलेज के प्रिंसिपल :

जून, सन् 1935 में अम्बेडकर गवर्नमेंट लॉ कॉलेज के प्रिंसिपल पद पर नियुक्त हुए।[74] उन दिनों इस पद का बड़ा महत्व था। समझा जाता था कि जो व्यक्ति इस पद पर आसीन होगा, वह आसानी से उच्च न्यायालय का न्यायाधीश बन सकता है।

धर्म परिवर्तन :

डॉ. अम्बेडकर ने स्पष्ट किया कि हिन्दु धर्म व्यक्ति के महत्व को अमान्य करता है। हिन्दू धर्म में एक वर्ग को ज्ञान प्राप्त करने, दूसरे वग्र को शस्त्र प्रयोग करने, तीसरे को व्यापार करने और चौथे वर्ग को केवल दूसरों की सेवा करते रहने की व्यवस्था है।[75] प्रत्येक व्यक्ति को ज्ञान की आवश्यकता है। प्रत्येक व्यक्ति की शस्त्र की आवश्यकता है। प्रत्येक व्यक्ति धन चाहता है। धर्म जो इसकी परवाह नहीं करता, केवल कुछ लोगों को ही शिक्षा का लाभ उठाने की अनुमति देता है, शेष को निरक्षर और अज्ञानी बनाये रखता है, धर्म नहीं है, बल्कि लोगों को अनन्तः काल तक मानसिक अक्षमता में बनाये रखने का षड्यन्त्र है। जो धर्म एक वर्ग को शस्त्र प्रयोग करने और आत्मरक्षा के लिए शेष समाज को उस पर आश्रित रहने की आज्ञा देता है वह धर्म नहीं, शेष समाज के लोगों को शाश्वत् दास बनाये रखने की योजना है।[76] सन् 1935 तक अम्बेडकर इस निष्कर्ष पर पहुंच गए थे कि हिन्दू समाज में रहकर अछूत सम्मान का जीवन नहीं बिता सकते। उन्होंने हिन्दू धर्म का त्याग करने तथा कोई अन्य धर्म अंगीकार करने के बारे में विचार करना आरम्भ कर दिया।[77] सन् 1935 तक अम्बेडकर इस निष्कर्ष पर पहुंच गए थे कि हिन्दू समाज में रहकर अछूत सम्मान का जीवन नहीं बिता सकते। उन्होंने हिन्दू धर्म का त्याग करने तथा कोई अन्य धर्म अंगीकार करने के बारे में विचार करना आरम्भ कर दिया।[78] ईसाई र्ध, इस्लाम, सिख धर्म तथा बौद्ध धर्म के नेताओं ने अम्बेडकर से अनुरोध किया कि वे उनके धर्म को स्वीकार कर लें।[79]

भारतीय शासन अधिनियम, 1935

तीन गोलमेज परिषादों तथा ब्रिटिश संसद के दोंनो सदनों की संयुक्त समिति के प्रयासों का फल था– सन् 1935 का भारतीय शासन अधिनियम। इस अधिनियम का भारत के राष्ट्रवादी तत्वों ने घोर विरोध किया और उसे एक प्रतियामी कानून बताया। इस अधिनियम ने वास्तविक सत्ता भारतीय जनता को न सौंपा कर ब्रिटिश अधिकारियों के ही हाथों में रहने दी।[79] कानून ने केन्द्र में द्वेध कार्यपालिका की स्थापना करके आशिंक उत्तरदायी शासन का सूत्रपात किया और एक अखिल भारतीय संघ की स्थापना की योजना प्रस्तुत की। अधिनियम के फलस्वरूप प्रांतों में द्वैध शासन–प्रणाली का अंत हुआ और प्रांतीय स्वायत्तता की शुरूआत हुई।[80] प्रांतीय स्वायत्तता के ऊपर अनेक प्रतिबंध लगे हुए थे। संघीय सिद्धान्त के अनुरूप ही अधिनियम ने तीन सूचियों में केन्द्र और प्रांतों के बीच शक्तियों का विशद् रूप से वितरण किया। इसके अलावा अधिनियम ने एक संघीय न्यायालय की स्थापना का भी प्रबंध किया।[81] भारतीय शासन अधिनियम, सन् 1935 के अन्तर्गत अप्रैल, सन् 1937 में प्रांतीय स्वायत्तता का श्रीगणेश हुआ। फरवरी सन् 1937 में महानिर्वाचन हुए। छह प्रांतों मे कांग्रेस ने पूर्ण बहुमत प्राप्त किया और दो प्रांतों में वह सबसे शक्तिशाली दल के रूप में उभरी। अम्बेडकर ने अगस्त सन् 1936 में इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी नाम से एक नए राजनीतिक दल का गठन किया। दल ने 17 स्थानों पर चुनाव लड़े जिनमें से 15 स्थानों पर उसके उम्मीद्वार विजयी हुए। अम्बेडकर खुद भारी बहुमत से जीते। बम्बई विधानमंडल में कांग्रेस को बहुमत प्राप्त हुआ और उसने मंत्रिमंडल का निर्माण किया।[82] इस काल की एक महत्त्वपूर्ण घटना 7 नवम्बर, सन् 1938 की मजदूरों की हड़ताल है। यह हड़ताल औद्योगिक विवाद विधेयक के विरोध में हुई थी। इस हड़ताल द्वारा अम्बेडकर ने सिद्ध कर दिया कि वे मजदूरों के क्षेत्र में भी सफल हो सकते हैं। जिन–जिन प्रांतों

---

69 कौर, धनन्जय, डॉ. बाबसाहेब अम्बेडकर, पूर्वोक्त, पृष्ठ 212

70 डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर, राइटिंग एण्ड स्क्रेचिंग (खण्ड–5), (गवर्नमेंट ऑफ महाराष्ट्र, पब्लिकेशस, बम्बई) सनृ 1989, पृष्ठ 78

71 कीर, धनन्जय, डॉ. बाब साहेब अम्बेडकर, जीवन–चरित, पूर्वोक्त, पृष्ठ 235

72 पूर्वोक्त, पृष्ठ 237

73 पूर्वोक्त, पृष्ठ 239

74 डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर राइटिंग एण्ड स्क्रेचिंग (खण्ड–5),पूर्वाक्त पृष्ठ 59

75 निम, डॉ. डी. आर. अम्बेडकर जीवन –दर्शन, पूर्वोक्त, पृष्ठ 124

76 उपरोक्त, पृष्ठ 127

77 कीर, धनन्जय, डॉ. बाब साहेब अम्बेडकर, जीवन चरित पूर्वोक्त, पृष्ठ 399

78 उपरोक्त पृष्ठ 401

79 डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर राइटिंग एण्ड स्क्रेचिंग (खण्ड–5), (गवर्नमेंट ऑफ महाराष्ट्र, पब्लिकेशस, बम्बई) सनृ 1987, पृष्ठ 32

में कांग्रेस की सरकारें बनीं, वहाँ उन्होंने उल्लेखनीय सफलता पाप्त की। खेतिहारों की जिम्मेदारों के अत्याचारों से रक्षा करने के लिए सुधार किए गए। अशिक्षा के उन्मूलन के लिए महात्मा गांधी की बुनियाद तलीन की योजना को अपनाया गया। कांग्रसी मंत्रीमंड़लों ने गांवों के सुधार, कुटीर उद्योगों के विकास और पंचायतों के पुनर्गठन की ओर भी ध्यान दिया। अछूतों की दशा में सुधार करने के भी प्रवत्न किए गए। कांग्रेस के कार्यक्रम में, नशाबंदी को मुख्य स्थान प्राप्त था। गैर–कांग्रसी प्रांतों में प्रांतीय स्वायत्तता का प्रयोग विशेष सफल नहीं हुआ। वहाँ गवर्नरों दिन–प्रतिदिन के शासन में हस्तक्षेप करना जारी रखा।[83]

द्वितीय महायुद्ध

भारत में प्रांतीय स्वयत्तता का प्रयोग सुचारू रूप से चल ही रहा था कि 3 सितम्बर, सन् 1939 को दूसरे विश्वयुद्ध का ज्वालामुखी फूट पड़ा। इंग्लैण्ड ने नाज़ी जर्मनी के विरूद्ध लोकतंत्र और स्वतन्त्रता की रक्षा करने के नाम पर हथियार उठाए। वायसराय ने भारतीय जनता के निर्वाचित प्रतिनिधियों को कोई सूचना दिए बिना ही घोषणा कर दी कि भारत भी जर्मनी के विरूद्ध युद्ध में शामिल है। ब्रिटीश सरकार ने जिस मनमाने ढ़ग से भारत को युद्ध में झोंक दिया था, कांग्रेस को वह नागवर गुजरा और कांग्रेसी मंत्रिमंड़लों ने अपने–अपने त्याग–पत्र दे दिए।[84] मुस्लिम लीग ने कांग्रेसी मंत्रिमंड़लों के त्याग–पत्र पर प्रसन्नता व्यक्त की और ''मुक्ति दिवस'' मनाया।

द्वि–राष्ट्रीय सिद्धान्त

सन् 1940 में देश की राजनीतिक स्थिति गंभीर हो गई थी। रामगढ़ में कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन हुआ और उसमें अपने लाहौर अधिवेशन में देश के विभाजन और पाकिस्तान के निर्माण के पक्ष में एक प्रस्ताव पास किया।[85] इस बीच हिटलर ने यूरोप के कई देशों को रौंद डाला। दिस्मबर सन् 1941 में जापान लड़ाई में कूद पड़ा। इससे स्थिति पंचीदा बन गई।[86] सुभाषचन्द्र बोस ने कांग्रेस की अध्यक्षता से त्यागपत्र दे दिया और वे छिप कर जापान पहुँच गए। वे भारत के बाहर रहकर और अंग्रजों के शत्रुओं के साथ मिल भारत की आजादी के लिए युद्ध करना चाहते थे।[87] गाँधीजी ने अक्टूबर, सन् 1940 में युद्ध में अंग्रेजों की कोई सहायता न करे। अम्बेडकर ने सन् 1940 के अंत में पाकिस्तान के सम्बन्ध में अपनी पुस्तक ''थॉट्स ऑन पाकिस्तान'' प्रकाशित की। अम्बेडकर ने पाकिस्तान के विचार का समर्थन किया लेकिन सलाह दी कि हिन्दू और मुसलमान आबादी की पुरी अदला–बदली होनी चाहिए। पाकिस्तान के सारे हिन्दू हिन्दुस्तान में आ जाएँ और हिन्दुस्तान के सारे मुसलमान पाकिस्तान चले जाएँ।[88]

वायसराय की एक्जीक्यूटिव कौंसिल के सदस्य

जुलाई, सन् 1941 के अंत में वायसराय ने अपनी एक्जीक्यूटिव कौंसिल का विस्तार किया। उन्होंने अम्बेडकर को रक्षा परामर्श समिति का सदस्य नियुक्त किया।[89] अम्बेडकर ने दलित वर्गों के युवकों से अनुरोध किया कि वे फौज में नौकरी करें।[90]

क्रिप्स प्रस्ताव

मार्च, सन् 1942 में ब्रिटिश सरकार ने सर स्टैफर्ड क्रिप्स को वैधानिक गतिरोध दूर करने के लिए भारत भेजा। क्रिप्स ने कांग्रेस मुस्लिम लोग, हिन्दू महासभा, सिख संगठनों तथा देशी रियासतों के नरेशों से बात की और भारत के वैधानिक गतिरोध को दूर करने के लिए कुछ प्रस्ताव किए।[91] क्रिप्स योजना में लड़ाई खत्म होने पर भारत की स्वतन्त्रता का वचन दिया लेकिन पिछले दरवाजे से पाकिस्तान के निर्माण की भी कोशिश की। क्रिप्स योजना में कहा गया था कि युद्ध के पश्चात् संविधान सभा की स्थापना की जाएगी। संविधान सभा स्वतन्त्र भारत के संविधान का निर्माण किया।[92] रियासतों को इस बात की छूट थी कि वे भारत संघ में शामिल हों या न हो। संविधान सभा को ब्रिटिश सरकार के साथ एक संधि करनी थी। भारत के सभी राजनीतिक दलों ने क्रिप्स योजना को अस्वीकार कर दिया। अम्बेडकर ने भी क्रिप्स योजना को अस्वीकार कर दिया। 14 अप्रैल, सन् 1942 को अम्बेडकर 50 वर्ष के हो गए और बम्बई तथा कुछ अन्य स्थानों पर उनकी वर्षगांठ धूमधाम से मनायी गई। देश के सभी प्रमुख सूाचार–पत्रों विशेषकर महाराष्ट्र के समाचार–पत्रों ने अम्बेडकर की विद्वता और सार्वजनिक संवाओं की प्रशंसा की।[93]

श्रम मंत्री

जुलाई, सन् 1944 में वायसराय ने अपनी एक्जीक्यूटिव कौंसिल का फिर से गठन किया और उसमें अम्बेडकर को श्रम विभाग सौंपा।[94] भारत के इतिहास में यह पहला अवसर था कि एक अछूत को वायसराय की एक्जीक्यूटिव कौंसिल में उत्तरदायी पद पर नियुक्त किया गया। अम्बेडकर अपने श्रम, विद्वता और कर्तव्यनिष्ठा के बूते पर जमीन से उठकर आसमान तक पहुँच गए थे। उन्हें चारों ओर से बधाई और शुभकामनाओं के संदेश मिले।[95] अनेक संस्थाओं ने उनका अभिनन्दन किया।

भारत छोड़ो आन्दोलन

काग्रेंस ने अगस्त, सन् 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन आरम्भ किया। गाँधीजी ने 3 अगस्त, सन् 1942 को बम्बई में कांग्रेस कार्यसमिति के सामने भाषण दिया और उसे भारत छोड़ो आन्दोलन के महत्व की जानकारी दी। इसके अगले दिन गाँधीजी तथा अन्य कांग्रेसी नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया।[96] गाँधीजी ने भारत छोड़ो आन्दोलन के सम्बन्ध में जो भाषण दिए थे, उसमें उनका 'करो या मरो' का सन्देश भी शामिल था।[97] गाँधीजी ने कहा था कि या तो हम भारत को आजाद करेंगे या इस प्रयत्न में अपने प्राणों की आहुति देंगे। अब हम गुलाम बन कर जिंदा नहीं रहेंगे। वायसराय ने कांग्रेस के निर्णय को अपने लिए चुनौती माना। नेताओं की गिरफ्तारी के कारण उत्तेजित जनता को उचित मार्ग दशर्न नहीं मिल सका। वह अपना संतुलन खो बैठी और अनेक स्थानों पर हिंसा की वारदातें हुई। सरकार ने अपने दमन–चक्र को पूरी तेजी से चलाया और जनता के खुले विद्रोह को दबाने में सफलता प्राप्त की। मुस्लिम लीग, हिन्दू महासभा, साम्यवादी दल और अम्बेडकर के अनुयाइयों ने आन्दोलन में कोई भाग नहीं लिया।[98] अम्बेडकर ने सरकार को यह समझाने का प्रयत्न किया कि भारतीय राजनीति में दलितों की महत्वपूर्ण भूमिका है और उनके सहयोग के बिना भारत की वैधानिक समस्या का कोई संतोषजनक समाधान नहीं हो सकेगा।[99]

शिमला सम्मेलन :

जून, सन् 1945 के अन्तिम सप्ताह में वायसराय लार्ड वैवेल ने शिमला में एक सम्मेलन का आयोजन किया। सम्मेलन 29 जून, सन् 1945 को आशामय वातावरण में आरम्भ हुआ।[100] लेकिन मुस्लिम ली और कांग्रेस के मतभेद हमेशा से ही पृष्ठभूमि में रहे थे। वे फिर खुलकर सामने आ गए। कांग्रेस ने हिन्दू–मुस्लिम समानता की शर्त स्वीकार कर ली। लेकिन जिन्ना इस बात पर अड़ गए कि कार्यकारणी परिषद के लिए मुस्लिम सदस्य मनोनीत करने का अधिकार केवल मुस्लिम लीग को मिलना चाहिए।[101] कांग्रेस ने इस दावे का विरोध किया क्योंकि उसकी स्वीकृति का यह आशय होता है कि कांग्रेस भी एक विशुद्ध हिन्दू संस्था है और उसका कोई राष्ट्रीय स्वरूप नहीं है। पंजाब के मुख्यमंत्री मलिक खिज्र हयात खां ने भी मुस्लिम लीग के दावे का विरोध किया। जिन्ना भी हठधर्मी से शिमला सम्मेलन असफल हो गया।[102]

कैबिनेट मिशन :

जुलाई, सन् 1945 में इंग्लैण्ड में आम चुनाव हुए और मजदूर दल के हाथों में सत्ता आ गई। ब्रिटेन के नए प्रधानमंत्री क्लीमेट एटली ने यह स्वीकार किया कि भारत को स्वतन्त्रता पाने का अधिकार है। उन्होंने यह भी घोषणा की कि किसी अल्पसंख्यक वग्र को बहुसंख्यक वर्ग की उन्नति के मार्ग में बाधा नहीं बनने दिया जाएगा।[103] ब्रिटिश प्रधानमंत्री ने मंत्रिमंडल के तीन सदस्यों का एक प्रतिनिधि मंडल भारत भेजा। मंत्रिमण्डल के ये तीन सदस्य थे – सर स्टेफर्ड क्रिप्स, ए. वी. एलेक्जैडर और लार्ड पौथिक लारेस। कैबिनेट मिशन के सदस्य 24 मार्च, सन् 1946 को दिल्ली पहुंचे। दलित वर्गों ने अम्बेडकर को अपना नेता चुना और उन्हें अधिकार दिया कि वे कैबिनेट मिशन के सामने दलितों के हितों का प्रश्न रखें। अम्बेडकर ने मांग की कि विधानमंडलों में दलितों के प्रतिनिधियों का चुनाव पृथक निर्वाचन पद्धति के द्वारा हो। उन्होंने यह भी मांग की कि विधानमंडलों तथा सरकारी नौकरियों में दलितों को उचित प्रतिनिधित्व मिलना चाहिए।[104] अम्बेउकर चाहते थे कि भारत के नए संविधान में इन उपबंधों को शामिल किया जाए। कैबिनेट मिशन ने 16 मई, सन् 1946 को अपने प्रस्तावों की घोषणा कर दी। मिशन ने मुस्लिम लीग की पाकिस्तान विषयक मांग का ध्यानपूर्वक परीक्षण किया और निष्कर्ष निकाला कि एक प्रभुतासम्पन्न मुस्लिम राज्य की स्थापना अव्यावहारिक है। उसने कहा कि पाकिस्तान के निर्माण से भारत साम्प्रदायिक समस्या का संतोषजनक हल नहीं हो सकता। मिशन ने भारत में एक ऐसे संघ की स्थापना का प्रस्ताव किया जिसमें ब्रिटिश भारत के प्रांत और देशी राज्य दोनों सम्मिलित हों। नए भारतीय संघ को इस बात की छूत होगी कि वह ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल से अलग हो जाए।[105] संविधान सभा के बारे में मिशन ने बताया कि उसके सदस्य साम्प्रदायिक आधार पर चुने जाएंगे। प्रांतीय विधानसभाओं के धार्मिक सम्प्रदायों को 10 लाख की जनसंख्या पर एक प्रतिनिधि चुनने का अधिकार दिया जाएगा। यह संविधान सभा भारत के लिए एक संविधान बनाएगी जो कुछ शर्तों के अधीन होगा। इन शर्तों में एक यह थी कि भारत संघ वैदिशिक मामलों, प्रतिरक्षा तथा यातायात पर नियंत्रण रखेगा। दूसरे सारे विषम तथा अवशिष्ट शक्तियाँ प्रांतों के पास रहेंगी। जब तक संविधान बन कर तैयार हो, तब तक के लिए कैबिनेट मिशन ने एक ऐसी अंतरिम सरकार का प्रस्ताव किया जिसे भारत के प्रमुख राजनैतिक दलों का समर्थन प्राप्त हो और उसमें सभी विभाग जनता के विश्वस्त नेताओं के हाथों में रहे।[106] जून, 1946 के तीसरे सप्ताह में अम्बेउकर ने वायसराय की कार्यकारणी परिषद से विदा ली। श्रममंत्री के रूप में उन्होंने अनेक उपयोगी कार्य किए थे। जून, सन् 1946 में ही उन्होंने बम्बई में सिद्धार्थ कॉलेज की स्थापना की।[107]

संविधान सभा :

जुलाई, सन् 1946 में संविधान सभा के लिए निर्वाचन हुए। इन निर्वाचनों में कांग्रेस ने 205 तथा मुस्लिम लीग ने 73 स्थान प्राप्त किए।[108] संविधान सभा के लिए अम्बेडकर बंगाल विधानसभा की ओर से मुस्लिम लीग के सदस्यों की मदद से चुने गए। 9 दिसम्बर, सन् 1946 को संविधान सभा की पहली बैठक हुई। संविधान सभा ने डा्. राजेन्द्र प्रसाद को अपना अध्यक्ष चुना।[109] 13 दिसम्बर, सनृ 1946 को जवाहर लाल नेहरू ने संविधान सभा के प्रमुख अपना उद्देश्य प्रसताव प्रस्तुत किया। प्रस्ताव में नेहरू ने कहा कि भारत का लक्ष्य एक संप्रभुता सम्पन्न गणराज्य की स्थापना करना है।[110] इस बीच भारत की साम्प्रदायिक स्थिति बिगड़ती जा रही थी। ब्रिटिश सरकार इस निर्णय पर पहुंची कि भारत की स्थिति उसके नियंत्रण से बाहर हो गई। वह भारत को आजादी देने में जितनी देर करेगी, उतनी ही हालत और बिगड़ जाएगी, उसने भारत के भाग्य को उसकी जनता के हाथों में छोड़कर यहाँ से चले जाने का निश्चय किया। ब्रिटिश प्रधानमंत्री एटली ने 20 फरवरी, सन् 1947 की महत्वपूर्ण घोषणा में अपने इस निर्णय की जानकारी दी। उन्होंने कहा : ''सम्राट की सरकार स्पष्ट रूप से अपने इस निश्चय को सूचित कर देना चाहती है कि वह जून सन् 1948 तक जिम्मेदार भारतीयों के साथ में सत्ता सौप देगी।[111] ब्रिटिश सरकार ने उपर्युक्त घोषणा करते समय आशा प्रकट की कि अंग्रेजों के भारत से हटने के बाद भारतीय राजनीतिज्ञ अपनी बुद्धिमता का परिचय देंगे और देश की समस्याओं का हल निकालने में समर्थ होगे। प्रधानमंत्री एटली की घोषणा में यह भी स्पष्ट कर दिया था कि यदि संविधान सभा जून सन् 1948 तक कोई सर्वसम्मत संविधान न बना सकी तो सम्राट की सरकार को यह विचार करना पड़ेगा कि ब्रिटिश की केन्द्रीय सरकार का दायित्व पूरे का पूरा, ब्रिटिश सरकार की केन्द्रीय सरकार को सौंपा जाए, उसे विभक्त करके प्रांतीय सरकारों को सौंपा जाए अथवा उसे किसी ऐसे ढंग से जो सर्वोचित तथा भारतीयों के लिए सबसे लाभदायक हो, सौंपा जाए। सत्ता–हस्तान्तरण के कार्यको आसान बनाने के लिए ब्रिटिश सरकार नेजो कदम उठाये उनमें से एक यह था कि वायसराय लार्ड वैवेल को लंदन वापस बुला लिया और उनके स्थान पर लार्ड माउंटबैटन को भारत का नया वायसराय नियुक्त किया।[112] ब्रिटिश सरकार के 20 फरवरी, सन् 1947 के वक्तव्य में मुस्लिम लीग की पाकिस्तान की मांग को प्रच्छन्न रूप से स्वीकार कर लिया था। लीग अखंड भारत के आधार पर कोई समझौता करने के लिए तैयार नहीं हुई। उसने संविधान सभा

[100] अम्बेडकर बी.आर,
[101] उपरोक्त, पृष्ठ 106
[102] उपरोक्त, पृष्ठ 109
[103] डॉ. बाबासाहेग अम्बेडर राईटिंग्स एण्ड सचिव (खण्ड–5) पूर्वोक्त, पृष्ठ 92
[104] उपरोक्त, पृष्ठ 94
[105] उपरोक्त, पृष्ठ 95
[106] उपरोक्त, पृष्ठ 98
[107] सिंह आर.जी., डॉ. अम्बेडकर : समाज वैज्ञानिक (मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल) पूर्वोक्त, पृष्ठ 88
[108] कीर, बाबासाहेग अम्बेडकर, जीवन–चरित, पूर्वाक्त, पृष्ठ 360
[109] उपरोक्त, पृष्ठ 362
[110] बाली, एल. आर., डॉ. अम्बेडकर और भारतीय संविधान, (भीम–पत्रिका प्रकाशन, जालंधर), पूर्वोक्त, पृष्ठ 56
[111] उपरोक्त, पृष्ठ 58
[112] उपरोक्त, पृष्ठ 60–61

का बहिष्कार किया। देश की राजनीतिक स्थिति बराबर बिगड़ती गई। नए वायसराय लार्ड माउंटबैटन सारी स्थिति का सावधानी से अवलोकन किया और निष्कर्ष निकाला कि देश की दशा सुधारने के लिए क्रांतिकारी उपाय अपनाया होगा और उनकी सम्मति में वह क्रांतिकारी उपाय था–देश का विभाग। कांग्रेस ने भी देश के विभाजन का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। माउंटबैटन ने भारत विभाजन के संबंध में अपनी योजना की घोषणा 3 जून सन् 1947 को की। उन्होंने अंग्रेजों के भारत से हटने की तारीख बताकर 15 अगस्त, सन् 1947 तय की।[113] माउंटबैटन योजना के आधार ब्रिटिश संसद ने जुलाई, सन् 1947 में भारतीय स्वतन्त्रता अधिनियम पास किया। इस अधिनियम के फलस्वरूप 15 अगस्त, 1947 को भारत का विभाजन हो गया तथा विश्व रंगमंच पर भारत और पाकिस्तान दो स्वतन्त्र राष्ट्रों का उदय हुआ।[114]

केन्द्रीय विधिमंत्री

जब जुलाई, सन् 1947 के अंतिम सप्ताह में स्वतन्त्र भारत के नए मंत्रिमण्डल का निर्माण हुआ, उसमें अम्बेडकर को विधि मंत्री बनाया गया।[115] 21 अगस्त, सन् 1947 को संविधान सभा ने संविधान की प्रारूप समिति का निर्माण किया। अम्बेडकर इस समिति के अध्यक्ष नियुक्त किए गए। यह अम्बेडकर के जीवन का चरमोत्कर्ष था। नए भारत ने अपनी विधियों के निर्माण का कार्य अम्बेडकर के हाथों में सौंप दिया और उन्होंने अपनी यह जिम्मेदारी कुशलतापूर्वक निबाही। फरवरी, सन् 1948 के अंतिम सप्ताह में अम्बेडकर ने संविधानका प्रारूप तैयार कर लिया और उसे संविधान सभा के अध्यक्ष की सेवा में प्रस्तुत किया।[116] अब डॉ. अम्बेडकर की आयु 56 वर्ष की हो गई थी। उन्हें कई रोगों ने घेर लिया था और उनका स्वास्थ्य संतोषजनक नहीं था। उन्होंने सुश्री डॉ. शारदा कबीर से विवाह करने का निश्चय किया। डॉ. शारदा जाति से सारस्वत ब्राह्मण थी। 15 नवम्बर, सन् 1948 को सिविल मैरिजेज एक्ट के अन्तर्गत डॉ. अम्बेडकर की नई दिल्ली स्थित कोठी पर यह विवाह सम्पन्न हुआ।[117]

भाषायी प्रांत :

इसी समय भारत सरकार ने एक भाषायी आयोग का गठन किया जिसका काम भाषायी प्रांतों की मांग के संबंध में रिपोर्ट तैयार करना था। अम्बेडकर ने महाराष्ट्र की ओर से आयोग के सामाने गवाही दी और भाषायी प्रांतों के गठन की मांग का समर्थन किया।[118]

प्रारूप संविधान

प्रारूप संविधान छह महिनों तक जनता के सामने रहा था। 4 नवम्बर, सन् 1948 को अम्बेडकर ने प्रारूप संविधान को संविधान सभा के सामने पेश किया।[119] इस अवसर पर अम्बेडकर नेएक महत्वपूर्ण भाषण दिया और संविधान की मुख्य विशेषताओं की व्याख्या की। उन्होंने कहा कि संविधान व्यवहारिक है। वह लचीला है और उसमें इतनी मजबूती है कि वह देश की एकता के सूत्र में बांधे रखेगा। यदि इस संविधान के अन्तर्गत घटना चक्र विपरीत रूख लेता है, तो वह संविधान की नहीं, संविधान के संचालकों की कमी होगी।[120] संविधान सभा ने संविधान के अनुच्छेदों पर एक–एक करके विचार किया। 29 नवम्बर, सन् 1948 को संविधान का अनुच्छेद 11 स्वीकृत हुआ जिसने अस्पृश्यता का अंत कर दिया।[121] अम्बेडकर ने 25 नवम्बर, सन् 1949 को संविधान के तीसरे वाचन के अवसर पर वाद–विवाद पर उत्तर दिया। अम्बेडकर का यह भाषण अत्यन्त तर्कयुक्त, विद्वत्तापूर्ण और ओजस्वी था।[122] 26 नवम्बर, सन् 1949 को संविधान सभा ने भारत के लोगों के नाम पर संविधान को अंगीकृत किया। संविधान में 395 अनुच्छेद तथा 4 अनुसूचियाँ थी।[123] संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने अम्बेडकर की सराहना की।

हिन्दू कोडबिल :

संविधान पास होने के बाद अम्बेडकर ने अपना ध्यान हिन्दू कोडविल पर केन्द्रि किया। बिल का लक्ष्य हिन्दू समाज के मूल ढांचे को बदलना तथा उसे अधिक उदार बनाना था।[124] जिससे कि वह आधुनिक युग के अनुकूल हो सके। अम्बेडकर ने इस विधेयक को तैयार करते समय हिन्दू समाज में व्यापक मतभेद उत्पन्न हो गए। अम्बेडकर को बिल पास कराने में कांग्रेस पार्टी के सदस्यों से वांछित सहायता नहीं मिली। उन्होंने 27 सितम्बर, सन् 1951 को मंत्रिमण्डल से त्यागपत्र दे दिया।[125] तथापि प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू की राय पर वे 11 अक्टूबर, सन् 1951 तक अपने पद पर कार्य करते रहे।[126]

अम्बेडकर ने इस सम्मेलन में भाग लिया। अपने भाषण में उन्होंने कहा कि बौद्ध धम्र संसार का सबसे महान् धर्म है। वह एक धर्म होने के साथ–साथ सामाजिक सिद्धान्त भी है।[136]

अम्बेडकर पर विभिन्न व्यक्तियों एवं संस्थाओं का प्रभाव :

अम्बेडकर के विचारों को प्रभावित करने वाले कुछ अन्य कारण भी थे। इनमें उनके माता–पिता, स्कूल और विश्वविद्यालय में उनके शिक्षक और अन्य परिचित सम्मिलित है। अम्बेडकर के पिता श्री रामजी सकपाल धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। प्रातः और सायंकाल वे ईश्वर की आराधना किया करते थे, भक्ति गीत गाते थे और बच्चों के समक्ष रामायण और महाभारत जैसे महान ग्रन्थों का पाठ करते थे। इन दोनों महान ग्रन्थों ने देश

[113] डॉ. बाबसाहेब अम्बेडकर, राइटिंग्स एण्ड स्पीचेच (खण्ड–5) पूर्वाक्त, पृष्ठ 76
[114] उपरोक्त, पृष्ठ 80
[115] निम, डी.आर. अम्बेडकर जीवन दर्शन पूर्वोक्त, पृष्ठ 105
[116] उपरोक्त, पृष्ठ 107
[117] भटनागर राजेन्द्र मोहन, डॉ. अम्बेडकर व्यक्तित्व और कृतित्व, पूर्वोक्त, पृष्ठ 129
[118] सिंह, आर.जी., डॉ. अम्बेडकर के सामाजिक विचार (मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी–भोपाल), सन् 1991, पृष्ठ 29
[119] लोखण्डे जी.एस., भीमराव रामजी अम्बेडकर : अ स्टडी इन सोशल डेमोक्रेसी, (इन्टेलेक्चुअल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली) पृष्ठ 114
[120] उपरोक्त, पृष्ठ 117
[121] डॉ. बाबसाहेब अम्बेडकर राइटिंग्स एण्ड स्पीचेज (खण्ड–5) पूर्वोक्त, पृष्ठ 92
[122] उपरोक्त, पृष्ठ 95
[123] उपरोक्त, पृष्ठ 98
[124] सिंह, आर. जी., डॉ. अम्बेडकर के सामाजिक विचार, पूर्वोक्त, पृष्ठ 115
[125] उपरोक्त, पृष्ठ 119
[126] सिंह, आर.जी. सामाजिक न्याय एवं दलित संघर्ष, (राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर) सन् 1994, पृष्ठ 102
[136] पूर्वोक्त, पृष्ठ 166

www.ignited.in

के कई महान व्यक्तियों के जीवन को प्रेरणा दी है और उनके जीवन की नई दिशा देने के प्रेरणास्रोतों और शक्ति रहे है। वे मराठी संतों जैसे मोरोपन्त, मुक्तेश्वर और तुकाराम के आध्यात्मिक गीत भी गाया करते थे। वे महात्मा फूले के मित्र और प्रशंसक थे।[137] कबीर के दोहे भी वे गाते थे। उनकी समाज के कल्याण में भी रूचि थी।[138]

एक बार सन् 1892 में जब भारत सरकार ने सेना में महार जाति के लोगों की भर्ती पर प्रतिबन्ध लगा दिया तो उन्होंने श्री रानाडे से पिटिशन लिखवा कर प्रस्तुत की कि यह अन्यायपूर्ण आदेश रद्द किया जाए। शासन द्वारा निर्मित भवनों में अछूतों के लिए भी जगह हो इस हेतु एक बार वे बम्बई के गवर्नर से भी मिले थे। इस प्रकार अम्बेडकर को ''पश्चिमी भावना, शक्तिशाली मानसिक ऊर्जा और अपने समाज के कल्याण की तीव्र इच्छा अपने पिता से प्राप्त हुई थी।[139] अम्बेडकर की माताजी भीमाबाई का परिवार भी कबीर के सम्प्रदाय का अनुयायी था। अम्बेडकर के दादा भी इसी भांति सम्प्रदाय को मानते थे। कबीर ने जाति प्रथा की निन्दा की थी।[140] इसलिए अम्बेडकर पर अपनी माता तथा दादाजी का भी प्रभाव स्वाभाविक परिलक्षित होता है।

अम्बेडकर को जब वे हाई स्कूल में पढ़ते थे तब एक शिक्षक, जिनका नाम अम्बेडकर था, से अत्यधिक स्नेह प्राप्त हुआ। इन शिक्षक ने उनका नाम आम्बावाडेकर से बदल कर आम्बेडकर कर दिया था। एक अन्य शिक्षक मराठी लेखक और समाज सुधारक श्री के. ए. केलेस्कर भी भीमराव की अध्ययन प्रवृत्ति को देखकर प्रसन्न हो गए थे और वे उन्हें पढ़ने के लिए नई–नई किताबे देने लगे थे। उन्होंने अपनी पुस्तक ''लाइफ ऑफ गौतम बुद्ध'' की एक प्रति डॉ. अम्बेडकर को भेंट की थी। उन्होंने ही महाराजा बडौदा से अम्बेडकर की सिफारिश की थी जिससे उच्च अध्ययन के लिए उन्हें छात्रवृत्ति प्राप्त हुई थी। बाद में महाराजा बडौदा ने अम्बेडकर को विदेश में उच्च अध्ययन हेतु भी छात्रवृत्ति प्रदान की थी।[141] अमेरिका में प्रो. एडविन आर. ए., सैलिग्मेन उनके शिक्षक थे। उन्होंने अम्बेडकर को बहुत अधिक प्रभावित किया। अम्बेडकर ने राजस्व के सिद्धान्त उन्हीं से सीखे थे। प्रो. सेलिग्मेन की अनुमति से वे उनकी सभी कक्षाओं में उपस्थित रहते थे। अम्बेडकर की पुस्तक ''इवाल्यूशन ऑफ प्राविन्शियल फारनेन्स इस ब्रिटिश इंडिया'' की भूमिका प्रो. सेलिग्मेन ने ही लिखी थी।[142] इसी प्रकार लंदन विश्वविद्यालय के शिक्षकों में प्रो. एडविन केनन प्रमुख थे जिन्होंने अम्बेडकर को बहुत अधिक प्रभावित किया।[143] अम्बेडकर की पुस्तक ''दि प्राब्लम ऑफ दि रूपी'' की भूमिका प्रो. कीन्स के निष्कर्षों के बिल्कुल विपरीत थे।[144] अपने अध्ययन के दौरान अम्बेडकर एक दिन में 18 घण्टे तक अध्ययन करते थे और ऐसा लगातार कई महिनों तक हुआ। वैसे अध्ययन के दौरान अर्थशास्त्र ही अकेला विषय नहीं हुआ करता था।[145] उन्होंने अपने समय के सभी महत्वपूर्ण लेखकों की पुस्तकों का अध्ययन किया और यथास्थान उनको उद्धत भी किया। अतः संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि ''डॉ. अम्बेडकर को साहित्य सृजन के लिए प्रेरणा स्वयं अपने जीवन और विचारों से भी प्राप्त हुई। यदि वे महार जाति के अछूत परिवार में पैदा नहीं होते और उनको छूआछूत का कटु अनुभव नहीं हुआ होता तो संभवतः उनकी लेखनी कुछ और ही होती। अम्बेडकर की रचनाओं के प्रेरणास्रोतों वे स्वयं और उनके चारों ओर की सामाजिक परिस्थितियां रही है।[146] उनको आधुनिक एवं सभ्य जीवन जीने का मार्ग अमेरिका और इंग्लैण्ड में प्राप्त पश्चिमी शिक्षा से मिला। बुद्ध ने वास्तविक धर्म नैतिकता और लोकतंत्र की दिशा दिखायी। कबीर ने उनमें एक मनुष्य के रूप में सोचने की ज्योति जताई। यदि ज्योतिबा फुले ने उनको शुद्रों की समस्याओं का समाधान बताया तो जॉनड्यूबी ने उन्हें व्यावहारिक चिन्तन पद्धति प्रदान की। इसी तरह, कार्ल मार्क्स ने अस्पृश्यता के आर्थिक पक्ष एवं जस्टिस रानाड़े ने राजनीति के क्षेत्र में कार्य करने का क्रमिक तथा व्यावहारिक पक्ष निर्देशित किया। यद्यपि सत्याग्रह की आन्दोलनात्मक पद्धति, उदार राष्ट्रवाद एवं अन्तर्राष्ट्रीयता के मौलिक तत्व ग्रहण किये।[147] डॉ. अम्बेडकर, इस तरह विविध स्रोतों एवं प्रभावों से शक्ति ग्रहण करते हुए अछूतोद्धार तथा नये भारत के पुनर्निर्माण के महानतम योद्धा बन गये।

अम्बेडकर पर बुद्ध के विचारों का प्रभाव :

धर्मांतर की घोषणा के बाद डॉ. अम्बेडकर का सारा समय व्यापक अध्ययन चिन्तन, लेखन, दलितों के राजनीतिक अधिकारों के लिए संघर्ष तथा संगठन, दलित किसान, कामगार एकता, महिलाओं में जागृति आदि कामों में ही बीता है, और यही समय भारत के राजनीतिक जीवन में भी बहुत ही उथल–पुथल का रहा है। भारत के भावी राजनीतिक स्वरूप का यह निर्णायक काल था और इसलिए देश के सांप्रदायिक अलोकतांत्रिक संगठन और शक्तियों जिस तरह से संगठित और उग्र बनती जा रही थी उसी प्रकार लोकतांत्रिक, धर्म–निरपेक्ष संगठन और शक्तियाँ भी काफी सक्रिय बन गई थी। उनका हमेशा यही प्रयास और सोच रहा है कि देश में और अन्तर्राष्ट्रीय जगत में भी लोकतांत्रिक और धर्मनिरपेक्ष शक्तियाँ ही मजबूत हो।[148]

डॉ. अम्बेडकर द्वारा धर्मांतर की घोषणा को व्यापक राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन का संदर्भ प्राप्त है। उनकी धर्मांतर की संकल्पना यह कोई पारंपरागत अर्थ में या रूढ़ अर्थ में धर्मांतर की संकल्पना नहीं है। एक धर्म को नकार करके दूसरे धर्म को स्वीकार कर लेना इस तरह की निरर्थक संकल्पना उनके धर्मांतर में नहीं थी। धर्मांतर की घोषणा उनके व्यापक आंदोलन और चिंतन का परिणाम थी। इस ज्ञान–विज्ञान के युग में बीसवीं शताब्दी में जहाँ धर्म की संकल्पना अवैज्ञानिक, अशास्त्रीय ओर अप्रासंगिक साबित हो रही है। नई और ज्ञान–विज्ञान पर आधारित संस्कृति तथा सांस्कृतिक जीवन मूल्य समाज में मूल धारण कर रहे है, ऐहिकवाद, धर्मनिरपेक्षता, अनिश्वरवाद, स्वतन्त्रता, समानता, भाईचारा, समाजवाद आदि व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन के मूल्य बन गये है। इस युग में डॉ. अम्बेडकर जैसे पश्चिमी विद्याविभूषित, समानतावादी, स्वतन्त्रतावादी, लोकशाहीवादी,

---

137 कीर, धनन्जय, डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर जीवन–चरित, पूर्वोक्त, पृष्ठ 112
138 उपरोक्त, पृष्ठ 14
139 उपरोक्त, पृष्ठ 17
140 गुप्त विश्व प्रकाश, गुप्ता मोहिनी, भीमराव अम्बेडकर व्यक्ति और विचार, पूर्वोक्त, पृष्ठ 37
141 भारती के.एस. फाउन्डेशन ऑफ अम्बेडकर थॉट (दत्त संस प्रकाशन, नई दिल्ली) सन् 1990, पृष्ठ 17
142 भगवान दास, दस स्पोक अम्बेडकर (खण्ड–1) (बुद्धिस्ट पब्लिशिंग हाउस, जालंधर) सन् 1963, पृष्ठ 8
143 उपरोक्त, पृष्ठ 10
144 कीर, धन्नजय, डॉ. बाबसाहब अमबेडकर जीवन–चरित पूर्वोक्त, पृष्ठ 13
145 रिशि, हरिशचन्द्र, मानव अधिकारों के प्रबल प्रक्षधर डॉ. अम्बेडकर, पूर्वोक्त, पृष्ठ 17
146 जाटव, डी. आर., बाबासाहब डॉ. बी. आर. अम्बेडकर, व्यक्तित्व एवं कृतित्व, (समता साहित्य सदन, जयपुर) (द्वितीय संस्करण) सन् 1988, पृष्ठ 159
147 गुप्त विश्व प्रकाश, गुप्ता मोहिनी, भीमराव अम्बेडकर व्यक्ति और विचार, पूर्वोक्त, पृष्ठ 38
148 कसबे, रावसाहेब डॉ. अम्बेडकर धर्मानतर–समाज प्रबोधन पत्रिका, पुणे, अंक–नवम्बर–दिसम्बर, सन् 1975

समाजवादी नेता जो हिन्दू धर्म, संस्कृति, साहित्य, समाज तथा सभ्यता की इतनी कठोर आलोचना करता है वह निश्चित रूप से धर्मातर की संकल्पना को व्यापक परिवर्तन के संदर्भ में ही सोचता है। अन्यथा उन्हें 1956 तक इंतजार करने की गरज नहीं थी। धर्मातर की घोषणा करके डॉ. अम्बेडकर हिन्दुओं से (हिन्दू धर्म तथा समाज) बदला लेना नहीं चाहते थे और न तो इस धर्मातर की घोषण के पीछे किसी प्रकारके बदले की (रिव्हेंज) भावना थी और उन्हें यदि यही करना होता तो ये मुस्लिम या ईसाइ बनकर उस उद्देश्य को प्राप्त कर सकते थे। लेकिन देश की समस्या काहल इसमें नहीं थी।[149] देश में उस समय अछूतों की संख्या छह–सात करोड़ थी, कुछ कम नहीं थी और देश में किसी भी दलित–गैरदलित नेता पर जनता का इतना विश्वास नहीं था कि जनता उस नेता के कहने पर कुछ भी करने के लिए तैयार हो। जिन्होंने महात्मा गांधी का नेतृत्व मान्य किया था वह भी केवल अंगेजों के विरोध के लिए। लेकिन गांधीजी जिस ताकत से साथ उन लोगों को अंग्रेज विरोध में जन–आंदोलन में ला सके उन्हीं लोगों को वे जात–पांत तथा अछूतपन को मिटाने के आंदोलन में नहीं उतार सकते थे। वे न इस मामले में गांधी जी को प्रमाण मानते थे। उस आंदोलन और नेतृत्व का महत्व अंग्रेज विरोध तक ही था।

लेकिन यह बात भारत में केवल डॉ. अम्बेडकर को प्राप्त थी कि उसका नेतृत्व व्यापक परिवर्तन का था इसलिए दलित समाज उनके कहने पर स्वतन्त्रता के पहले हो या बाद में भी हर कुर्बानी करने के लिए तैयार था। इसी में उने धर्मातर संकल्पना की व्यापकता है।[150] बिना किसी भी प्रकार की सत्ता प्राप्ति के जनता का इतना बड़ा विश्वास भारत में नहीं बल्कि दुनिया के इतिहास में अतुलनीय है।

बीसवीं शताब्दी की विशेषता है ज्ञान, विज्ञान, लोकतंत्र, समाजवाद और धर्म निरपेक्षता और दुनिया में समानता और स्वतन्त्रता के मूल्यों के आधार पर समाज हो या राष्ट्र अपनी गुलामी के विरोध में समानता और स्वतन्त्रता की प्राप्ति के लिए लड़ रहा है। गुलामी की जड़ें कमजोर होती जा रही है और स्वतन्त्रता, समानता की जड़ें मूल पकड़ रही है। इस प्रासंगिकता में निकट भविष्य में भारत जिस स्वतन्त्रता को हासिल करने वाला था और दलित समाज जिस स्वतन्त्रता और समानता के लिए लड़ रहा था उस परिवर्तन को एक नया आकार, नया संदर्भ, नया अर्थ देने का युगकारी नेतृत्व डॉ. अम्बेडकर ने स्वीकार किया था। धर्मातर की घोषण उसी की पूर्व क्रिया थी।

डॉ. अम्बेडकर ने धर्मातर के संदर्भ में कई धर्मों का उनके सिद्धान्तों का और धर्म संस्था का ऐतिहासिक भूमिका का अध्ययन किया था। इस संदर्भ में उन्होंने बुद्ध के विचारों का, बौद्धमत का भी अध्ययन किया या यह बात उनके व्याख्यानों और लेखों में जगह–जगह बौद्धमत से संबंधित उदाहरणों से पता चलती है। धर्मातर की घोषणा के बाद बम्बई में 31 मई 1936 को धर्मातर के सवाल पर दलित समाज की राय जानने के लिए ओर अन्तिम निर्णय के लिए जो दलित वर्ग परिषद हुई थी उस व्याख्यान में उन्होंने बौद्ध साहित्य का एक बहुत ही महत्वपूर्ण उदाहरण देकर अपना व्याख्यान समाप्त किया था। उदाहरण था सिद्धार्थ गौतम 'बुद्ध' के महापरिनिर्वाण के पहले की है।[151] बुद्ध के अनुगामी आनन्द जब उनके पास जाते है और कहते है कि 'आप परिनिर्वाण के पहले संघ को कुछ मार्गदर्शन करें।' 'बुद्ध' कहते है कि आनन्द, संघ को मुझसे क्या चाहिए ? जो कुछ मुझे कहना था, वह मैने कह दिया है। जो कुछ मैने जाना था, वह संघ के समाने रख दिया है। बुद्ध रहस्यवादी नहीं। अपने दीप आप बनो। स्वयं प्रकाशित बनो। अपने आप पर भरोसा रखो। स्वयं की शरण में जाओं। सत्य पर अटल रहो। बुद्ध के इन वचनों की याद दिलाकर उन्होंने कहा कि, 'मै अन्त में यही कहना चाहता हूँ कि, आप अपना आधार बनो, अपनी बुद्धि की शरण में जाओं। बुद्ध का यह मार्ग–दर्शन सबको प्रेरक सिद्ध होगा।

हमने व्यक्ति को अपनी मानसिक गुलामी को तोड़ देने का और स्वयं प्रकाशमान बनने का संकेत है। इसमें एक तरह से बुद्ध के विचारों का अन्तिम सार है। यही मानवी जीवन का अन्तिम उद्देश्य है, जो मनुष्य के सभी बन्धनों को तोड़ देता है और शेष रहता है केवल मनुष्य मात्र। बुद्ध के इस संदेश ने उन्हें बहुत ही प्रभावित किया था।

धर्मातर के सवाल पर डॉ. अम्बेडकर ने जितना अध्ययन और चिंतन तथा लेखन किया था उतना शायद किसी ने भी नहीं किया। धर्मातर की घोषणा के बाद बौद्धमत की ओर उनका जितना लगाव और झुकाव दिखाई देता है। उतना उसके पहले नहीं। धर्मातर करने से अछूतों का समानता के अधिकार तो मिलने वाले ही थे, लेकिन उनका अछूतापन भी समाप्त होने वाला था। चूंकि जब तक कोई भी व्यक्ति हिन्दू धर्म का अंग बनकर रहता है, तब तक हिन्दू धर्म के श्रेयनिः श्रय के, पाप–पुण्य के और छूत–छात के यमनियम उसे लागू होते है।[152] किन्तु हिन्दू धर्म से अपना सम्बन्ध विच्छेद करके दूसरे धर्म को स्वीकार करने से, उसे मानवधर्म के नियम लागू हो जाते है। इस बात को ध्यान में रखते हुए ही डॉ. अम्बेडकर ने धर्मातर के विचारों को बढ़ावा दियाथा। धर्मातर की बात पर विचार करते हुए ही उन्होंने मुस्लिम और ईसाई धर्म का भी विचार किया था। किन्तु उसमें भी मुस्लिम समाज जैसे सबल समाज का समर्थन प्राप्त होने से हिन्दू समाज के दुराग्रह का सही ढंग से मुकाबला किया जा सकता है। यह भी उन्हें लगता था । इसीलिए बौद्ध या आर्य समाजी होकर उच्चवर्णीय कहे जाने वाले लोगों के दुराग्रह पर चाहिए उतना परिणाम होना कदापि सम्भव नहीं।[153] यह उनका मत था। उसी प्रकार उन्हें यह भी लगता था कि, प्रार्थना समाजिस्ट या आर्य समाजिस्ट या बौद्ध होकर अछूतपन समाप्त करने का सवाल हल होने वाला नहीं है। क्योंकि व्यावहारिक दृष्टि से अछूत हिन्दू ही समझे जायेंगे और उनके सिर पर अछूतपन का बोझ बना ही रहेगा।[154] इस प्रकार प्रारम्भ में उनकी भूमिका थी लेकिन धर्मातर की घोषणा के बाद उन्होंने लाहौर (पंजाब) के जात–पांत तोड़करर मण्डल के वार्षिक अधिवेशन के लिए जो अध्यक्षीय भाषण लिखाथा उसे यह पता चलता है कि उनकी इस भूमिका में बहुत ही परिवर्तन हो गया था और बाद में उनकी सारी गतिविधियाँ बौद्ध मत को स्वीकार करने की ओर ही थी।[155]

इस अध्याय में भीमराव अम्बेडकर का व्यक्तित्व, पारिवारिक पृष्ठभूमि, अध्ययन, अध्यापन एवं सार्वजनिक जीवन में प्रवेश का

[149] खरात, शंकरराज, डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकरांचे धर्मान्तर, पूर्वोक्त, पृष्ठ 66
[150] उपरोक्त, पृष्ठ 69
[151] दस स्पोक अम्बेडकर (खंड–4) पूर्वोक्त, पृष्ठ 22
[152] उपरोक्त, पृष्ठ 36
[153] भारती, के. एस., फॉउन्डेशन ऑफ अम्बेडकर थॉट, पूर्वोक्त, पृष्ठ 87
[154] उपरोक्त, पृष्ठ 90
[155] लोखण्डे जी. एस., भीमराव रामजी अम्बेडकर, अ स्टडी इन सोशल डेमोक्रेसी, पूर्वोक्त, पृष्ठ 73

अध्ययन तथा विभिन्न व्यक्तियों और संस्थाओं का डॉ. अम्बेडकर पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है। तीसरे अध्याय में भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन तथा स्वतन्त्रता प्राप्ति के सन्दर्भ में डॉ. अम्बेडकर की भूमिका का अनुशीलन किया गया है।

BIBLIOGRAPHY

ARTICLES

1. AMBEDKER CENTENARY. New Age 90Apr22 : 2 Ed.

2. AMBEDKAR CENTENARY-year of social justice. New Age 91Apr 14 : 2 Ed.

3. AMBE DKAR'S SOCIALIST legacy. Janata 91Apr I 4: 3-5 Ed.

4. ANJANEYULU, D. BR Ambedkar. Bhavan's Journal 81 Juni : 65-72.

5. ANJANEYULU, D BR Ambedkar: Social and political thinker. Indian Review 77(I!)81Apr : 9-13.

6. ANJANEYULU, D. Crusader for human equality. Hindu 90Apr 13 : 8 : 3.

7. APPADORAI, A. Ideas of Ambedkar. Hindustan Times 80 Apr 13: 7: 1

8. BABA SAHEB Ambedkar :A humanist. March of Karnataka 19(4) 81Apr 9-10

9. BAISANTRY, DK. Ambedkar and conversions. Mainstream 81Oct 13:9-10.

10. BALASANKAR, R. Ambedkar becomes Baudh to purify Hinduism and stop Communism, Organiser 83A pri 7: 15-16.

11. BANDIVEDKAR, PM. Ambedkar: Champion of human rights. Democratic Wodd 91 Jan 6: 9-10.

12. BEHL, Aditya. Buddhist renaissance in modern India: Dr. Ambedkar and the untouchables India International Centre Quarterly 17(2) 90 Monsoon: 83-99.

13. BENNUR, PH. Ambedkar's concept of religion. Mainstream 88 Apr 23 : 22-24.

14. BHARILL, Chandra, Relevance of Dr. Ambedhur, Democratic World Apr 29 : 13-14

15. BURRA, Neer1Was Ambedkar just a leader of the Maharashtra. Economic and Political Weekly 86 Mar 8 : 429-31.

16. CHAKRAVARTTY, Nikka Honouring Ambedkar. Maiessream 90Apr 21: 4-5.

17. CLARK, Blake., Ambedkar the untouchable. Christian Herald 50.

18. DANDAVTE, Madhu, Ambedkar. A dreamer of social liberation. Janata 79 Apr 15 : 3-4

19. DHAWAN, Shakuntala, BR Ambedkar: Apostle of social justic. Yojana 91 Apr 15 : 12-13

20. DHOLAKIA, Jitendra, Economic ideology of Dr. Ambedkar Financial Express 89 Apr 14: 5:7.

21. DOSHI, Harish, Gandhi and Ambedkar on the removal of untocuhability. In Shah, Vimal P and Agrawal, Bindo C, ED. Reservation policy, programmes and issues. P 47-57.

22. EQUAL PLACE with Hindus and Muslims in future Constitution: Dr. Ambedkar explains scheduled castes demands: Gandhi-Jinnah talks criticised. Main (Madras) 44 Sept 26.

23. GANDHII'S PART in RTC: Dr. Ambedkar's indictment. Liberator (Madras) 44 Sept 236.

24. GIFT OF the grab. Times of India (Jaipur) 90 Apr. 21 : 6 : Ed.

25. GOGOI, Gunati: Founder of golden thought. Assam Information 42 Apr-May: 19-22.

26. GOPAL SINGH, Ambedkar the man and his mission. Hindustan Times 90 Apr. 13: 11: 7.

27. GURU, Gopal, Caste and class paradigm mainstream 87 Apr 17: 7-10.

28. GURU, Gopal Hinduisation of Ambedkar in Maharashtra. Economic and Political Weekly 91 Feb 16: 339-41.

29. HONOURING (Dr.) AMBEDKAR, Hindustan Time 90 Apr 9: 11: 1 Ed.

30. JADHAV, MH. Loyalty to Ambedkar reaffirmed. Economic and Political Weekly 88F20: 348-49.

31. JORDENS, J. Two giants look at the cosmic man: Ambedkar and Dayanand intespret the Purusa Sukta. Journal of the Oriental Institute 33(1-2) 83Sep-Dec: 1-10.

32. JOSHI, Navin Chandra. Ambedkar: He fought for the downtrodden. Democratic Worm 88 Apr 10: 9-10.

33. KAMATH, MV. Ambedkar and contemporary times. Organiser 97 May 5: 4.

34. KARNIK. Ambedkar's contribution to political and social thought. Janata 39 (7) 750ct19: 9-12.

35. KELKAR, BK, BR Ambedkar: The nationalist thinker. Organiser 86Apr 13: 7.

36. KELKAR, BK. BR Ambedkar: The visionary of a nationalist egalitarian society. Organiser 90Apr 15: 7.

37. KWATRA, RD. Ambedkar: Man and message. Hindustan Times 89May I: 11:7.

38. LIMAYE, Madha Ambedkar's early struggles. Sunday 84 Apr 22: 33-37.

39. MAHENDRA, KL Ambedkar: Symbol of struggle against social oppression. New Age 89 Oct 1: 8.

40. MALLIK, Basant Kumar. Arnbedkar and his movement for social equality. Mainstream 91Apr13: 4-6.

41. MALLIK, Basant Kumar. Ambedkar on constitution and national integration. Mainsheam 89Apr 15: 11-13.

42. MALLIK, Basant Kumar. Ambedkar on Indian society and politics Mainstream 89 April 14 : 7-10

43. MALLIK, Basant Kumar. Ambedkar in women progress, mainstream 87Aprl 1: 7:10.

44. MALLIK Basant Kumar Marx and Ambedkar: A comparative study, Mainstream 88 Apr. 23: 20-22.

45. MAN MOHAN SINGH. Ambedkar: The relentless crusader. Yojana 94 Apr 15: 10-11.

46. MEHTA, PL Ambedar The harbinger of Indian democracy. Janta 91Apr 14 : 7-8

47. MINHAS, SS. Ambedkar: A legal luminary and parliamentarian. Advance 34(4) 90Apr: 44.

48. MUNGEKAR, BL Ambedkar on Indian's agrarian problems. Janata 91Apr l4: 9-13.

49. MULGAOKAR, S. Diary of recluse. Indian Express 90Aprl 4: 8:7

50. NARAYANAN; KR. BR Ambedkar: A rebel against social system Mainstream 79 May 5 : 11-14.

51. NARAYANAN, KB. Remembering Ambedkar. Mainstream 84 Jan. 26 : 14, 64.

52. NEED FOR correct appraisal of Ambedkar's movement. Peoples Democracy 90 Apr 29 : 5.

53. NO WONOUR in this. Statesman 90Apr 5 : 6: 2 Ed.

54. PADGAONKAR, Dileep. Ambedkar and Gandhi. Mainstream 90 Apr 21: 3-5.

55. PADGAONKAR, Dileep. Ambedkar and Gandhi: An antagonism of profound significance. Times of India (Jaipur) 90 April 4: 6:3.

56. PHADKE, YD. Amid accolades, has the real Ambedkar been forgotten. Times of India (Jaipur) 90 May 4 : 7.

57. RAJMANI, RC. BR Ambedkar. Yojana 903unió : 23-26.

58. RAVINDRA KUMAR. Gandhi, Ambedkar and the Poona Pact. South Asia 8 (1-2) 85 Jun-Dec : 87-101.

59. RENUKA RAJENDRA. Arabedkar : A symbol of "Shramayeva Jayathe". March of Karnataka 21(9) 83Sep : 3-6.

60. RUDRAIAH, D. Ambedkar and his conversion. Radiance 79Dec304. SAROL Ambedkar and Buddhism. Mahabodhi 92(4-6) 84Apr-jun: 76-78.

61. SHAHARE, ML Ambedkar His ideas and ideals. Hindustan Times 8 Apr 12: 9t6.

62. SHEODAN SINGH. Ambedkar and the Dhamma. Mahabodhi 94(1- 3) 86 Jan-Mar : 23-28.

63. SIBNDE, JR. Form illusion to rationality. Radical Humanist 46(2) 82May : 21624.

64. SMITH, Sydne G. Baba Saheb Ambedkar : A study in greatness. March of Karnataka 21(7) 83Jul : 3-6.

65. THATTE, Yadunath. Ambedkar and population control. Janata 91Apr l4 : 124.

66. VAKIL, AK. Political socialisation of scheduled castes and Dr. Assbedkar, Rural Sociology 23(2) 82 Winter : 153-68.